सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सफलता की ख़ुशी मनाना अच्छा है पर, उससे जरूरी है अपनी असफलता से सीख लेना !

वर्ष 01, अंक 236, नई दिल्ली

मंगलवार, 07 नवम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

जनता का सीएक्यूएम, दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग से छोटा सा सवाल

दिल्ली में हिंदुओं के प्रमुख पर्व दिवाली पर पटाखे जलाने से प्रदूषण कैसे ?

संजय बाटला, सम्पादक

नई दिल्ली। **इजरायल द्वारा ग़ाज़ा पर अंदाजन 2 करोड़ 25 लाख विस्फोटक का प्रयोग किया पर वहा की वायु गुणवता पहले ग्रेप तक भी नहीं हुई तो दिल्ली में हिंदुओं के प्रमुख पर्व दिवाली पर पटाखे जलाने से प्रदुषण कैसे ?**

अन्य उत्सव पर आतिशबाजी के बाद भी वायु गुणवता पर दुर्प्रभाव नही तो दिवाली पर पटाखे जलाने से रोक क्यों ?

ग़ाज़ा की एयर क्वालिटी 2 करोड़ 25 लाख किलोग्राम बम गिरने के बाद भी दिल्ली की एयर क्वालिटी से बेहतर है फिर दिवाली पर्व पर पटाखों के जलाने से दिल्ली में प्रदुषण कैसे ?

-दीपावली पर पटाखे को बैन करना क्या अपनी कम्मियो को छुपाने के लिए? और यह बात साबित हो गई है 6 नवंबर को यह लेख लिखा जा रहा है और इस वक्त गाजा में एयर क्वालिटी 70 से 80 के बीच में है जबकि दिल्ली में एयर क्वालिटी विभिन्न इलाकों में 500 से 600 यहां तक 900 के बीच में है

-आसान भाषा में समझें तो इन आंकड़ों का मतलब है कि अभी भी गाजा की एयर क्वालिटी दिल्ली के मुकाबले कई गुना बेहतर है जबकि गाजा के अंदर इसराइल पिछले एक महीने से लगातार स्मार्ट बम बरसा रहा है और अब तक 25,000 टन यानी दो करोड़ 25 लाख किलोग्राम बम बरसा चुका है

-दिल्ली में दिवाली पर छोटी-मोटी फुलझड़ी और अनार बम जला कर हिंदू जनता खुश होती है लेकिन छोटे-छोटे हिंदू बच्चों की यह खुशी वामपंथियों को बर्दाश्त नहीं होती है ! आज तो दिवाली नहीं है कहीं बम नहीं फट रहे हैं फिर भी दिल्ली की एयर क्वालिटी इतनी खराब है इसकी वजह पंजाब में जलने वाली पराली है।

गाजा और दिल्ली की तुलना से स्पष्ट होता है कि पटाखों का दिल्ली के प्रदूषण से कोई लेना देना ही नहीं है !

-लेकिन हिंदुओं को अपमानित करने के लिए हिंदुओं के त्योहार को खराब करने के लिए और हिंदुओ की भक्ति श्रद्धा को विचलित करने के लिए दीपावली के चार दिन दिन पहले से ही पटाखे को सख्ती से बैन करने की बातें कही जाती हैं

-हिंदू अपने ही देश में वामपंथी और जिहादियों के इस तरह के प्रोपेगेंडा से बुरी तरह तंग आ चुका है और दुःख यह है की सुप्रीम कोर्ट भी इस पर संज्ञान नही ले रहा और दिल्ली में ही नही पूरे भारत में कहीं भी पर्वो पर पटाखों पर प्रतिबंध है तो उसे फौरन हटाए।

advertisement Tariff
w.ef. 1st January 2023

परिवहन विशेष

दिल्ली, एनसीआर से प्रसारित लोकप्रिय साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र

in Rs. / Sq. Cm.

	Basic	3rd Page	Back Page	Front Page Semi Solus	Form Page Solus
Delhi Aur Delhi	BW - Colour	Colour	Colour	Colour	Colour
Delhi	100*	200*	250*	300	300

Special Instructions:-

- Innovation on any page will be accepted at a premium of 100% on applicable card rate.
- Any specified position will be accepted at a premium of 25% on applicable card rate.
- B/W advertisement on page 3/back will charged at colour rate.
- Classified display advertisement will be charged on basic display rate.
- Pointers 4x4 sq. C. or 5x4 sq. cm. will be charged as per card rate.
- box reply charges (each box) will be charged Rs. 150/-
- Political advertisement - as applicable.

परिवहन विशेष में विज्ञापन के लिए ऑनलाईन भुगतान सीधे बैंक खाते/फ़ोन पे पर कर सकते हैं और विज्ञापन के मैटर के साथ ऑनलाईन भुगतान की रसीद व्हाट्सऐप नंबर 09212122095 या newstransportvishesh@gmail.com पर भेज सकते है। भुगतान करने के लिए *NEFT / IMPS / RTGS*
Account Name:-Transport Vishesh Limited
IFSC CODE :- INDB0001396
Cur Account no :- 259212122095
या Phone pay :- 9212122095

तेज रफ्तार कार ने तीन महिलाओं समेत चार को रौंदा

बचने के लिए शीशे पर चिपका रखा पुलिस स्टिकर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दक्षिण दिल्ली के ग्रेटर कैलाश-एक थाना इलाके में तेज रफ्तार कार ने तीन महिलाओं समेत चार लोगों को रौंद दिया। सभी रोड क्रॉस कर रहे थे। दुर्घटना में घायल महिला की सोमवार शाम को मौत हो गई। जांच में पता चला कि आरोपी कार चालक विनय शराब के नशे में कार चला रहा था। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे पकड़कर दिल्ली पुलिस के हवाले कर दिया। दक्षिण जिले की ग्रेटर कैलाश थाना पुलिस ने मामला दर्जकर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया है। कार पर दिल्ली पुलिस का फर्जी स्टीकर भी लगा था। पुलिस ने कार मालिक के खिलाफ भी कार्रवाई की है।

पुलिस को अर्चना कॉप्लेक्स के पास मूलचंद से चिराग दिल्ली जाने वाले रोड (पहले बीआरटी कॉरिडोर) पर सड़क दुर्घटना होने की सूचना मिली थी। ग्रेटर कैलाश थानाध्यक्ष अजीत सिंह की टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस को मौके पर एक ग्रे रंग की एनआईओएस ग्रैंड आई 10 हुंडई कार क्षतिग्रस्त हालत में मिली। दुर्घटनाग्रस्त कार के चालक एचएनओ 73, गोपाल नगर, नजफगढ़, दिल्ली निवासी विनय पुत्र रमेश कुमार को मौके पर मौजूद लोगों पकड़ रखा था। उसे पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपी की मेडिकल जांच में पता लगा कि वह काफी नशे में है। उसकी शराब पीने की मात्रा 280 अल्कोहल मीटर थी। दक्षिण जिला पुलिस उपायुक्त चंदन चौधरी ने बताया कि घायल बी 230, संजय कैंप दक्षिण पुरी, दिल्ली निवासी हरीश (54) पुत्र शालीग्राम, मकान नंबर 305, दक्षिणपुरी निवासी सीमा (46) पत्नी बादाम, संगम विहार रेखा (46) और नीरू(47) को एम्स के ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया। जहां शाम के समय नीरू की मौत हो गई।

रात में पी हुई शराब का नशा उतरा नहीं था

आरोपी ड्राइवर विनय अपने चाचा देवेंद्र सहरावत के साथ निजी फाइनेंसर के रूप में काम करता है। रविवार रात उन्होंने ई-227 सीआर पार्क में देवेंदर सहरावत का जन्मदिन मनाया था। सुबह आरोपी विनय अपने दोस्त राहुल के साथ अपने दूसरे दोस्त की कार की चाबी लेकर नागपाल के छोले भटूरे लाने मोती नगर जा रहा था। उसकी कार बहुत तेज रफ्तार पर थी। रफ्तार की वजह से वह कार पर कंट्रोल नहीं रख पाया और सड़क पर कर रहे चारों घायलों को रौंद दिया।

दोस्त के खिलाफ भी जालसाजी का मामला दर्ज

आरोपी विनय ने बताया कि दुर्घटनाग्रस्त कार उनके दोस्त लव कुश पांडे पुत्र महावीर पांडे निवासी 88ए खिरकी गांव, नई दिल्ली की है। वह प्रॉपर्टी डीलर का काम करता है। उसके दोस्त लव कुश ने अपनी कार पर दिल्ली पुलिस का फर्जी स्टीकर लगा रखा था। पुलिस को शुरुआती जांच में पता लगा कि आरोपी ने ट्रैफिक पुलिस से बचने के लिए दिल्ली पुलिस का फर्जी स्टीकर लगा रखा था। इस कारण मालिक लव कुश के खिलाफ भी जालसाजी का मामला दर्ज किया गया है।

अर्चना कॉम्पलेक्स के पास नहीं है कोई रेडलाइट

चिराग दिल्ली से मूलचंद जाते हुए दोनों कैरिज्वे पर अर्चना कॉम्पलेक्स के पास रेड लाइट नहीं है। यहां पर पहले लाइट सिग्नल था। ट्रैफिक पुलिस ने इस लाइट को खत्म करवाकर दोनों तरफ यू-टर्न बना दिए हैं। पैदल यात्रियों के लिए सड़क पार करने की कोई सुविधा नहीं है। ऐसे में यहां पर आए दिन हादसे होते रहते हैं।

दक्षिण जिले की ग्रेटर कैलाश थाना पुलिस ने मामला दर्जकर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया है। कार पर दिल्ली पुलिस का फर्जी स्टीकर भी लगा था। पुलिस ने कार मालिक के खिलाफ भी कार्रवाई की है।

साहब, राजनीति के अलावा भी कुछ कीजिए, अब दम घुट रहा है

कुछ स्थानों पर प्रदूषण स्तर 999 से भी ऊपर होने की आशंका है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि संवेदनशील स्थानों पर प्रदूषण का स्तर बेहद डरावने स्तर पर है और इससे लोगों को गंभीर बीमारियां हो सकती हैं...

नईदिल्ली। दिल्ली के प्रदूषण को मापने में सारे पैमाने छोटे पड़ गए हैं। रविवार और सोमवार दोनों ही दिन दिल्ली के कई स्थानों पर प्रदूषण 950 अंक से ऊपर रहा। कुछ स्थानों पर प्रदूषण स्तर 999 से भी ऊपर होने की आशंका है, लेकिन ज़्यादातर प्रदूषण मापक इकाइयों में इससे अधिक प्रदूषण स्तर को मापने की क्षमता नहीं है, लिहाजा प्रदूषण का अधिकतम स्तर 999 ही बताया जा रहा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि संवेदनशील स्थानों पर प्रदूषण का स्तर बेहद डरावने स्तर पर है और इससे लोगों को गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। इस बीच प्रदूषण को लेकर भाजपा और आम आदमी पार्टी के बीच ठन गई है। आम आदमी पार्टी ने प्रदूषण पर कुछ न करने का आरोप भाजपा पर लगाया है और अपने ट्विटर हैंडल से 'विषकाल' लिखकर ट्वीट किया है। इस पोस्ट में प्रधानमंत्री को मास्क पहने दिखाया गया है। आम आदमी पार्टी के नेता गोपाल राय आरोप लगाते रहे हैं कि प्रदूषण को रोकने के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश और हरियाणा की तरफ से कोई मदद नहीं मिल रही है। इस कारण प्रदूषण को कम करने में सफलता नहीं मिल पा रही है।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/ 25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए-4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने CAQM के चेयरमैन और मेंबर सेक्रेटरी से मिलकर सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने CAQM के चेयरमैन श्री एम एम कुट्टी जी और मेंबर सेक्रेटरी श्री अरविन्द नौटियाल जी से मिलकर BS 3/4 डीजल आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की सभी टैक्सी (LMV 4 पहिये टेम्पो ट्रेवलर) बसों, को ग्रेड रिस्पांस एक्शन प्लान फॉर एनसीआर के ग्रेप स्टेज से बाहर रखने के लिए ज्ञापन सौंपा.

एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट ने CAQM चेयरमैन और मेंबर सेक्रेट्री से शिकायत करी की दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग और दिल्ली सरकार और कमिसन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट के द्वारा प्रदूषण के नाम हम डीजल से चलने वाली टूरिस्ट टैक्सी को पिछले साल भी ग्रेप लगाकर बंद किया गया, और उनपर 20 हजार तक जुर्माना भी किया गया.

और इसबार भी दिल्ली सरकार एवं दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग और CAQM वास्तव में प्रदूषण के नाम पर टूरिस्ट टैक्सी (LMV 4 पहिये टेम्पो ट्रेवलर) के मालिकों को ही टारगेट कर रही है, और जान भुजकर हमारी डीजल BS 3/4 आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी (LMV 4 पाहियों टेम्पो ट्रेवलर)को दिल्ली एनसीआर मे बंद करा जा रहा हैं और इन गाड़ियों के 20 हजार तक का जुर्माना भी किया जा रहा हैं.

संजय सम्राट ने कहा की हमारे काफी ट्रांसपोर्टर्स ने 2019 के आख़री महीने में काफी डीजल की BS 3/4 टैक्सी (LMV 4 पहिये टेम्पो ट्रेवलर) ख़रीदे हैं अब 3 सालो में से 2 साल पार्किंग में ही खड़ी रही है अब इन गाड़ियों का क्या होगा? इनकी किस्तें हम कहाँ से भरेंगे.

डीजल टैक्सी बसें वों ही धुआँ अप्रैल महीने में देती है और वों ही धुआँ नवम्बर में, हमारी टैक्सी बसें सर्दी में कोई एक्स्ट्रा धुआँ नहीं देती. यें प्रदूषण की समस्या पराली जलाने से और पटाखों की वजह से ज्यादा होता है, और सबसे बड़ी बात सर्दियों में मौसम बदलता ही है. इसके अलावा दिल्ली एनसीआर मे कंस्ट्रक्शन का काम जोर पर बल्कि इंडिया गेट के आस पास ही आप देख लीजिये. इसकी वजह से धुल मिट्टी वातावरण मे फैल गई हैं और धुल मिट्टी का गुब्बार वातावरण मे हो गया हैं

हमने दिल्ली सरकार के परिवहन विभाग से प्रदूषण सर्टिफिकेट लिया हैं, हमारे ट्रांसपोर्टर्स अरबो रुपए ट्रांसपोर्ट विभाग को देते हैं. इस प्रदूषण सर्टिफिकेट से साबित होता हैं की हमारी डीजल की BS 3/4 टैक्सी(LMV टेम्पो ट्रेवलर) और बस

धुआँ नहीं देती.

ट्रांसपोर्ट से जुड़े धंधे में हजारों टैक्सी (LMV 4 पहिया टेम्पो ट्रेवलर)के मालिक जुड़े है इनके लाखो ड्राइवर्स है और करोडो परिवार इस से जुड़े है. इसका असर पूरे भारत के राज्यों मे पड़ रहा हैं राजस्थान हरियाणा और उत्तर प्रदेश पंजाब उत्तराखंड हिमाचल प्रदेश इत्यादि. क्योंकि इन राज्यों के ट्रांसपोर्टर्स की टैक्सी (LMV) दिल्ली मे एयर पोर्ट और रेलवे स्टेशन छोड़ने आ रही हैं तो उनका 20 हजार का चालान करा जा रहा हैं.

संजय सम्राट ने बताया की लोगो पर इतना पैसा नहीं है की BS 3/4 डीजल की गाड़ियों को बेचकर BS 6 डीजल की टैक्सी बसें ख़रीदे. सबसे बड़ी बात हम जो डीजल गाड़ियों में डाल रहें है वों भी BS 3/4 के हिसाब से ही मिल रहा है. जब डीजल एक जैसा है तो फिर BS 6 डीजल टैक्सी बस का क्या मतलब, वास्तव में थोड़ा बहुत डीजल गाडी में बदलाव करके टैक्सी बसों की कीमत 3 से 4 लाख बड़ा दी जाती है और यें सारा खेल BS सीरीज के नाम पर हो रहा है और कार और बसें बनाने वाली कम्पनी को भारी मुनाफा हो रहा है.

अभी भी हमारी BS 3/4 डीजल बसों को ट्रैफिक पुलिस और दिल्ली इनफ़ोर्समेंट विभाग द्वारा तंग किया जा रहा हैं जब यें गाड़ियाँ पर्यटको को एयर पोर्ट रेलवे स्टेशन पिक उप कराने या टूर कराने के बाद एयर पोर्ट रेलवे स्टेशन मे पर्यटको को छोड़ने जा रही हैं. बसों मे विदेशी पर्यटक होते हैं जिसका असर भारत के टूरिज्म पर भी पड़ेगा.

संजय सम्राट ने शिकायत करी की ट्रैफिक पुलिस और दिल्ली इनफ़ोर्समेंट विभाग को सख़्ती से निर्देश दिए जाए की इन बसों को तंग ना किया जाए.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने मांग करी हैं की हमारी BS 3/4 डीजल आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की सभी टैक्सी(LMV 4 पहिये टेम्पो ट्रेवलर) को चलने की इज्जाजत दी जाए और इन गाड़ियों को ग्रेड रिस्पांस एक्शन प्लान फॉर एनसीआर के ग्रेप स्टेज से परमानेंट बाहर रखा जाए .क्योंकि हमारी आल इंडिया टूरिस्ट परमिट की टैक्सी (LMV 4 पहिया टेम्पो ट्रेवलर) भी ज्यादातर दिल्ली से बाहर दुसरे राज्यों मे टूर पर चले जाते हैं.

संजय सम्राट इन सारी गाड़ियों की जितनी लाइफ हैं उतनी उन्हें चलने की इज्जाजत दी जाए की मांग भी करी क्योंकि यें भारत के करोडो लोगो की रोजी रोटी का सवाल है.

CAQM के चेयरमैन श्री एम एम कुट्टी जी और मेंबर सेक्टरी श्री अरविन्द नौटियाल जी ने अभी कुछ भी रियायत देने से मना कर दिया लेकिन जब प्रदूषण कम होगा तो हमारी मांगो पर वो विचार करेंगे।

वायु प्रदूषण का बढ़ने लगा खतरा, गर्भवती महिलाओं को ज्यादा रिस्क, ऐसे करें बचाव

इस महीने की शुरुआत से ही दिल्ली-एनसीआर समेत कई इलाकों में प्रदूषण का लेवल बढ़ रहा है. ऐसे में डॉक्टरों ने अलर्ट किया है. डॉक्टरों का कहना है कि अभी से लोगों को वायु प्रदूषण से बचाव करना होगा. इसके लिए डॉक्टरों ने कुछ टिप्स साझा किए हैं.

मौसम में परिवर्तन और ठंड शुरू होने के साथ ही दिल्ली और एनसीआर समेत कई इलाकों में वायु प्रदूषण के स्तर में इजाफा होने लगा है. बढ़ते खतरे को देखते हुए दिल्ली-एनसीआर में ग्रैप का पहला चरण भी शुरू करने का आदेश दिया गया है. प्रदूषण की वजह से सेहत पर भी गंभीर असर होता है. इससे लंग्स इंफेक्शन, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारी हो जाती है. प्रदूषण का सबसे ज्यादा खतरा गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों को होता है. डॉक्टरों का कहना है कि प्रेग्नेंट महिलाओं को अभी से उनकी सेहत का ध्यान रखना होगा. ऐसा इसलिए क्योंकि आने वाले दिनों में प्रदूषण का लेवल बढ़ेगा. अगर अभी से सावधानी बरती तो भविष्य में गंभीर खतरे से बचाव हो सकता है.

गुरुग्राम के मैक्स हॉस्पिटल्स में एसोसिएट डायरेक्टर (ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी) और औरा स्पेशलिटी क्लीनिक की डायरेक्टर डॉ. रितु सेठी बताती हैं कि वायु प्रदूषण के बढ़ने की वजह से लोगों को कई तरह की परेशानियां होती हैं. जिन लोगों को पहले से ही सांस संबंधित बीमारियां हैं उनको अधिक खतरा रहता है.

खासतौर पर गर्भवती महिलाओं और बच्चों को बढ़ते प्रदूषण के कारण ज्यादा परेशानी होती है, हालांकि अभी प्रदूषण अधिक नहीं है, लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा. ऐसे में अभी से बचाव करना जरूरी है. प्रदूषण से बचाव नहीं किया तो गर्भवती महिला को कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं.

प्रेग्नेंटमहिलाओं को खतरा

डॉ. रितु शेठी बताती हैं कि वायु प्रदूषण का लेवल बढ़ने से गर्भवती महिलाओं को सांस की परेशानी हो जाती है. जिन महिलाओं को पहले से ही अस्थमा है तो उनकी बीमारी अचानक बढ़ने लगती है. अस्थमा अटैक नहीं है तो भी सांस लेने की परेशानी हो सकती है. इसके साथ ही घबराहट भी होती है.

बढ़ते प्रदूषण का असर गर्भवती महिला के होने वाले बच्चे पर भी पड़ सकता है. बच्चे को जन्म के बाद में आईसीयू में भर्ती करने की जरूरत पड़ सकती है. कुछ मामलों में प्रीमैच्योर बर्थ होने का भी रिस्क रहता है. ऐसे में महिलाओं को वायु प्रदूषण से बचाव करना होगा. इसके लिए इन टिप्स को फॉलो कर सकते हैं.

ऐसे करें बचाव

ब्रीदिंग एक्सरसाइज करें
सुबह के समय घर से बाहर न निकलें
अगर सांस लेने में परेशानी हो रही है तो डॉक्टर से सलाह लें
रोज सुबह योग करें
अधिक प्रदूषण है तो बाहर मास्क लगाकर निकलें

रसोई गैस ने 55% महिलाओं को सांसों की बीमारी से बचाया, 2022 में 32 लाख मौतों की वजह बना घरेलू वायु

2014 के बाद से बढ़ाए गए एलजीपी गैस नेटवर्क और खास तौर पर गरीब परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए 9.59 करोड़ रसोई गैस कनेक्शन का ही परिणाम है कि 55 प्रतिशत महिलाओं में सांसों की बीमारी कम दर्ज की गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है कि 2020 में विश्व में करीब 32 लाख लोगों की मौत का कारण हानिकारक घरेलू वायु प्रदूषण रहा।

यह दुनिया की हालत दिखाता चिंताजनक आंकड़ा है कि वर्ष 2022 में दुनिया भर में 32 लाख मौतें घरेलू वायु प्रदूषण की वजह से हुईं। इस प्रदूषण का मुख्य कारण लकड़ी, कोयला, केरोसिन आदि पर खाना पकाना ही था। 2014 के बाद से बढ़ाए गए एलजीपी गैस नेटवर्क और खास तौर पर गरीब परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत दिए गए 9.59 करोड़ रसोई गैस कनेक्शन का ही परिणाम है कि 55 प्रतिशत महिलाओं में सांसों की बीमारी कम दर्ज की गई है।

उज्ज्वला कनेक्शन बढ़ाने के फैसला

29 अगस्त (मंगलवार) को उज्ज्वला कनेक्शन बढ़ाने के फैसले को बेशक राजनीतिक चश्मे से ही देखा जाएगा लेकिन इस निर्णय का सबसे बड़ा पहलू महिला सशक्तीकरण और स्वास्थ्य से जुड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट कहती है कि 2020 में विश्व में करीब 32 लाख लोगों और पांच वर्ष से कम आयु के 237000 बच्चों की मौत का कारण हानिकारक घरेलू वायु प्रदूषण रहा।

सांस संबंधी बीमारियां महिलाओं के लिए बनी हुई थीं खतरा

भारत में भी खास तौर पर ग्रामीण आबादी इस संकट से जूझ रही थी। खास तौर पर सांस संबंधी बीमारियां महिलाओं के लिए खतरा बनी हुई थीं। दरअसल, भारत में एलपीजी 1950 के दशक में आई, लेकिन वर्ष 2014 तक सिर्फ 14.5 करोड़ परिवारों को ही गैस कनेक्शन मिल सका। इसका कारण सीमित गैस वितरण नेटवर्क भी था। मोदी सरकार में उज्ज्वला के पहले और दूसरे चरण में मिलाकर कुल 9.59 करोड़ गरीब परिवारों को एलपीजी गैस कनेक्शन दिए जा चुके हैं।

क्या कहते हैं एलपीजी नेटवर्क के आंकड़े ?

सरकार ने कुल एलपीजी नेटवर्क को भी बढ़ाया। 2014 तक नेशनल एलपीजी कवरेज 55.90 प्रतिशत था, जो अप्रैल 2023 में 105.1 प्रतिशत हो गया। इसी तरह कुल सक्रिय एलपीजी उपभोक्ताओं की संख्या 2014 की तुलना में 1451.76 से बढ़कर 3140.33 लाख हो गए हैं। आंकड़े उस मिथक को भी नकारते हैं कि उज्ज्वला के लाभार्थी महंगाई की वजह से सिलेंडर दोबारा नहीं भरा पा रहे। सरकार के मुताबिक, वर्ष 2022-23 में उज्ज्वला के लाभार्थियों ने 35 करोड़ से अधिक सिलेंडर रीफिल कराए हैं।

वायु प्रदूषण और महिलाओं के मोटापे का है कोई संबंध, शोध ने बताया क्या!

अधेड़ उम्र की महिलाओं में वायु प्रदूषण के असर के कारण वे मोटी (Obese) होती जा रही हैं. (तस्वीरः Wikimedia Commons) अधेड़ उम्र की महिलाओं में वायु प्रदूषण के असर के कारण वे मोटी (Obese) होती जा रही हैं.

मोटापा एक वृहद वैश्विक समस्या होती जा रही है. बेशक यह कोई रोग नहीं हैं लेकिन आज के दौर में यह एक साथ कई बीमारियों (Disease) के होने की वजह बन जाता है. मोटापा लाइफस्टाइल की कई खामियों के होने का संकेतक भर है, जो कि अस्वस्थ खुराक, कसरत की कमी, अनुवांशिकी या फिर इन सभी समस्याओं का होना बताता है. लेकिन क्या पर्यावरण में कोई ऐसा कारक है जिसका मोटापे से संबंध. अगर नए अध्ययन की माने तो वायुप्रदूषण (Air Pollution) और महिलाओं में अधिक वजन के बीच में एक संबंध है. जो कि साधारण लोगों के लिए ही नहीं बल्कि वैज्ञानिकों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के लिए भी एक चौंकाने वाला नतीजा है.

50 साल के आसपास की उम्र की महिलाएं

यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के शोधकर्ताओं ने अपने नए अध्ययन में इस अप्रत्याशित संबंध की खोज है. इस अध्ययन के प्रथम लेखक जिन वांग के मुताबिक उम्र के 40 और 50 साल के दशक में पहुंच चुकीं जो महिलाएं वायुप्रदूषण का लंबे समय से सामना कर रही हैं, जिससे उनका शरीरिक भार अनुपात, कमर का आकार और शरीर का फैट बढ़ने लगता है. जिस वजह से उन्हें सेहत संबंधी अन्य

समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

वायुमंडलीय प्रदूषकों से गहरा नाता

इन नकारात्मक प्रभावों का नाइट्रोजन ऑक्साइड, ओजोन और उच्च स्तर के महीन कणों से विशेष संबंध है जो प्रमुख वायु प्रदूषक के तौर पर जाने जाते हैं. शोधकर्ताओं ने लिखा है कि इस अध्ययन में उन्होंने अमेरिका की1654 श्वेत, अश्वेत, चीनी और जापानी महिलाओं को शामिल किया था जिनकी औसत उम्र साल 2000 से 2008 के बीच में 49.6 साल थी.

शरीर संरचना के मापन

शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने प्रतिभागियों के रिहायशी पतों के आधार पर उनके इलाकों के वायु प्रदूषण की मात्रा से जोड़ा. प्रतिभागियों के आकार का मापन और शरीर संरचना का मापन करीब साल में एक बार की मुलाकातों में डीएक्सए का उपयोग किया गया. इससे पता चल सका है कि मोटापे को वास्तव मे वायुप्रदूषण के कौन से कारक प्रभावित करते हैं.

प्रतिमान का उपयोग

शोधकर्ताओं ने रेखीय मिश्रित प्रभावों वाले प्रतिमानों का उपयोग किया जिसमें उन्होंने वायुप्रदूषण और शरीर के आकार और संरचनात्मक मापनों के बीच संबंध का परीक्षण किया और यह भी जानने की कोशिश की कि इन संबंधों में किन भौतिक गतिविधियों की वजह से अंतर आ रहा है. और किन कारणों ने सेहत में निर्णायक बदलाव आ रहे हैं.

कई कारकों में बदलाव

इस अध्ययन के नतीजों के विश्लेषणों ने दर्शाया कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने का संबंध शरीर में ज्यादा फैट, उच्च अनुपात फैट, और मध्य उम्र की महिलाओं में निम्न कमजोर भार से है. जैसे इसमें से शरीर का फैट 45 प्रतिशत यानि करीब 2.6 पाउंड या 1.18 किलोग्राम तक बढ़ा पाया गया था. इसी तरह के नतीजे बाकी कारकों में भी देखने को मिले.

वायु प्रदूषण (Air Pollution) से वजन बढ़ने, शरीर का आकार बढ़ने जैसे कई कारक तत्व प्रभावित होते हैं. (प्रतीकात्मक तस्वीरः shutterstock)

शारीरिक गतिविधि

इसके अलावा शोधकर्ताओं ने शरीर संरचना के लिए लिहाज से वायु प्रदूषण और शारीरिक गतिविधि के बीच संबंध की भी पड़ताल की. उन्होंने पाया कि उच्च स्तर की शारीरिक गतिविधि प्रभावी रूप से शारीरिक संरचना के बदलावों को कम कर सकती है जिनका संबंध वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से है.

यह अध्ययन डाइबिटीज केयर में प्रकाशित हुआ है. इस शोध में वांग ने समझाया कि चूंकि इस अध्ययन ने मध्य उम्र की महलियाओं को लक्षित किया था, इसलिए इस अध्ययन की पड़ताल के नतीजों को पुरुषों और दूरी उम्र की महिलाओं के लिए समान्य रूप से लागू नहीं होता है.

भारत में बुजुर्ग ग्रामीण महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है घरों में मौजूद वायु प्रदूषण

भारत में औसतन करीब 18.7 फीसदी ग्रामीण महिलाएं ऐसे घरों में रह रही हैं, जहां वायु प्रदूषण का स्तर हानिकारक है। यह प्रदूषण बुजुर्ग और अधेड़ उम्र की महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है

भारत में औसतन करीब 18.7 फीसदी ग्रामीण महिलाएं ऐसे घरों में रह रही हैं, जहां वायु प्रदूषण का स्तर खतरनाक है। इतना ही नहीं, यह भी सामने आया है कि यह घरों के भीतर का वायु प्रदूषण बुजुर्ग और अधेड़ उम्र की महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

भारत के लिए वायु प्रदूषण एक बड़ी समस्या है। हालांकि अक्सर लोग बाहर खुले में मौजूद वायु प्रदूषण को ही जानलेवा मानते हैं, लेकिन घरों में मौजूद वायु प्रदूषण भी कम हानिकारक नहीं होता।

हाल ही में इसी को ध्यान में रखते हुए भारत के ग्रामीण परिवेश में मौजूद वायु प्रदूषण और उसके प्रभावों को समझने के लिए किए अध्ययन में सामने आया है कि ग्रामीण भारत में यह इंडोर एयर पॉल्यूशन बुजुर्ग और अधेड़ उम्र की महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है।

जर्नल बीएमसी में प्रकाशित इस रिसर्च से पता चला है कि जो महिलाएं अपने घरों में वायु प्रदूषण के संपर्क में थी उनकी संज्ञानात्मक कार्यात्मक क्षमता यानी याददाश्त, रोजमर्रा के कामों को करने की क्षमता, तार्किक और बुद्धिमता क्षमता अन्य महिलाओं की तुलना में कम थी।

गौरतलब है कि संज्ञानात्मक क्षमता से तात्पर्य मन की उन आन्तरिक प्रक्रियाओं से है, जो मनुष्य को जानने की ओर अग्रसर करती हैं। इसमें सभी मानसिक गतिविधियां शामिल हैं, जैसे ध्यान देना, याद करना, सांकेतीकरण, वर्गीकरण, योजना बनाना, विवेचना, समस्या हल करना, सृजन करना और उसके साथ किसी चीज की कल्पना करना।

ग्रामीण परिवेश में घरों में मौजूद वायु प्रदूषण एक बड़ी समस्या है क्योंकि आज भी विकासशील देशों में अधिकांश ग्रामीण घरों में खाना पकाने के लिए दूषित, ठोस ईंधन जैसे लकड़ी, कोयला, कंडे आदि का उपयोग किया जाता है।

भारत में डिमेंशिया का शिकार हैं हर 1,000 में से 20 बुजुर्ग

जोकि विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए ज्यादा खतरनाक है जो लम्बे समय से उसके संपर्क में रहती हैं। शोध के अनुसार यही वजह है कि यह खतरा बुजुर्ग और अधेड़ महिलाओं के लिए ज्यादा खतरनाक है क्योंकि वो लम्बे समय तक इसके संपर्क में रहने को मजबूर हैं।

पता चला है कि यह वायु प्रदूषण बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। यदि भारतीय जनगणना रिपोर्ट द्वारा जारी आंकड़ों को देखें तो जहां 1961 में बुजुर्गों की आबादी 5.6 फीसदी थी वो 2011 में बढ़कर 8.6 प्रतिशत हो गई थी। जबकि 2050 तक इसके 19.5 प्रतिशत होने की उम्मीद है। ऊपर से समय के साथ बढ़ता वायु प्रदूषण इन बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। गौरतलब है कि भारत में हर 1000 में से 20 बुजुर्ग डिमेंशिया का शिकार हैं। इसके अलावा बुजुर्ग महिलाओं में मनोभ्रंश का प्रसार अधिक बताया गया है।

वायु प्रदूषण की समस्या कितनी गंभीर है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह दुनिया में मृत्यु का चौथा सबसे बड़ा कारण है। 2019 में इसकी वजह से करीब 67 लाख लोगों की मृत्यु हुई थी।

इतना ही नहीं यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों को देखें तो दुनिया की करीब एक तिहाई आबादी यानी 240 करोड़ लोग मिट्टी का तेल, लकड़ी, फसलों के अवशेष, गोबर, और कोयला आदि की मदद से अपना भोजन तैयार करते हैं, जोकि घरों में हानिकारक वायु प्रदूषण का कारण बनता है। 2020 के आंकड़ों को देखें तो यह प्रदूषण हर साल होने वाली 32 लाख मौतों के लिए जिम्मेवार हैं।

इनमें पांच वर्ष कम उम्र के 237,000 बच्चे भी शामिल हैं जिनका जीवन इस घरेलु वायु प्रदूषण ने छीन लिया था। यह प्रदूषण सांस की बीमारियों, कैंसर, ह्रदय रोग, जन्म के समय कम वजन, स्टिलबर्थ, तपेदिक (टीबी), अस्थमा, मोतियाबिंद, और अंधापन सहित कई अन्य बीमारियों के खतरे को भी बढ़ा रहा है।

अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने भारत में लॉन्गिट्यूटिनल एजिंग स्टडी (एलएएसआई-2017-18) के आंकड़ों का उपयोग किया है। इन आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट हो गया है कि ठोस ईंधन से घरों के भीतर होता वायु प्रदूषण ग्रामीण भारत में बुजुर्ग महिलाओं के संज्ञानात्मक स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है। ऐसे में इससे बचने के लिए तत्काल कार्रवाई की जरूरत है, जिससे यह उम्र दराज और बुजुर्ग महिलाएं अपनी उम्र के इस पड़ाव पर एक बेहतर जीवन गुजार सकें।

जर्नल बीएमसी में प्रकाशित इस रिसर्च से पता चला है कि जो महिलाएं अपने घरों में वायु प्रदूषण के संपर्क में थी उनकी संज्ञानात्मक कार्यात्मक क्षमता यानी याददाश्त, रोजमर्रा के कामों को करने की क्षमता, तार्किक और बुद्धिमता क्षमता अन्य महिलाओं की तुलना में कम थी।

सांसों पर प्रदूषण का वार: दिल्ली के उपराज्यपाल ने हालात का लिया जायजा, राजघाट का किया दौरा, दिया ये आदेश

दिल्ली में बढ़ते हुए प्रदूषण को देखते हुए उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने राजघाट का दौरा किया। जहां उन्होंने हालात का जायजा लिया। उन्होंने साफ सफाई के साथ पानी के छिड़काव का आदेश दिया है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली और आसपास के इलाकों में लगातार हवा खराब होती जा रही है। कई जगहों पर एक्यूआई गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है। इसी बीच दिल्ली सरकार भी लगातार प्रदूषण को कम करने के लिए बैठकें कर रही है। सोमवार को दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने राजघाट का दौरा किया।

रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में बढ़ते हुए प्रदूषण को देखते हुए उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने राजघाट का दौरा किया। जहां उन्होंने हालात का जायजा लिया। उन्होंने साफ सफाई के साथ पानी के छिड़काव का आदेश दिया है। इससे पहले दिल्ली सचिवालय में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उच्च स्तरीय बैठक की। इस बैठक में दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय, आतिशी समेत कई अधिकारी मौजूद रहे।

दिल्ली में ग्रैप को चौथा चरण लागू, कई चीजों पर रोक

बता दें कि दिल्ली और आसपास के इलाकों में हवा विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक से 100 गुना ज्यादा जहरीली हो गई है। गंभीर होते हालात से निपटने के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली-एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) का चौथा चरण लागू कर दिया है। इसके तहत, सभी तरह के निर्माण और ध्वस्तीकरण कार्य पर तत्काल रोक लगा दी गई है।

प्रदूषणकारी वाहनों का दिल्ली में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है। सभी सरकारी, निजी कार्यालयों में 50 फीसदी कर्मियों के लिए घर से काम करने के निर्देश दिए गए हैं। दिल्ली सरकार ने प्राइमरी स्कूल 10 नवंबर तक बंद कर दिए हैं। सीपीसीबी के अनुसार, दिल्ली की हवा आज भी गंभीर स्थिति में है। मोती बाग का 488, पटपड़गंज का 471 और आरके पुरम का एक्यूआई 466 दर्ज किया गया है।

दिल्ली ही नहीं गाजियाबाद में हो रहा पानी का छिड़काव

बढ़ते वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने सभी विभागों को अलर्ट कर दिया है। निगरानी के लिए स्पेशल टीम गठित कर दी गई है। सुबह पांच बजे से सड़कों पर सप्रिंकलर से पानी का छिड़काव, निर्माण कार्यों को बंद कराने, खुले में जलने वाले कूड़े, कोयला या भट्ठी को पूर्णत प्रतिबंधित कराना, पटाखे पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करना, एंटी स्मोक गन का इस्तेमाल करना, सड़कों को धूल मुक्त करना व अन्य कार्य विशेष रूप से अभियान के तौर पर चलाने के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। ग्रैप के तहत दी गई गाइडलाइन का शत प्रतिशत पालन करने के लिए कहा गया है।

एनसीआर के शहरों की स्थिति भी गंभीर

एनसीआर में आने वाले सभी प्रमुख शहर भीषण प्रदूषण की चपेट में हैं। सबसे बुरा हाल गाजियाबाद का है, जहां एक्यूआई 494 दर्ज किया गया। नोएडा का एक्यूआई 414, ग्रेटर नोएडा का 410 रहा। वहीं, फरीदाबाद का एक्यूआई 450 और गुरुग्राम का 441 दर्ज किया गया।

दिल्ली-एनसीआर में फिर लगे भूकंप के झटके, एक सप्ताह में दूसरी बार कांपी धरती

दिल्ली सहित आसपास के शहरों में एक बार फिर से भूकंप के झटके लगे हैं। इस दौरान लोग घरों से बाहर निकल आए। अभी तक किसी भी तरह के अप्रिय समाचार की सूचना नहीं है। बता दें इस महीने में दूसरी बार दिल्ली-एनसीआर में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। शुक्रवार की रात को नेपाल में भूकंप आया था जिसमें लगभग 150 लोगों के मारे जाने की सूचना है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली सहित आसपास के शहरों में एक बार फिर से भूकंप के झटके लगे हैं। इस दौरान लोग घरों से बाहर निकल आए। अभी तक किसी भी तरह के अप्रिय समाचार की सूचना नहीं है। भूकंप के झटके 4 बजकर 16 मिनट पर महसूस किए गए।

बता दें इस महीने में दूसरी बार दिल्ली-एनसीआर में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। शुक्रवार की रात को नेपाल में भूकंप आया था, जिसमें लगभग 150 लोगों के मारे जाने की सूचना है। भूकंप का केंद्र नेपाल है, जिसके झटके दिल्ली-एनसीआर तक महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 5.6 रही।

3 नवंबर को नेपाल में आया था भूकंप

जर्मन रिसर्च सेंटर के अनुसार, रिक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 6.2 पर मापी गई। वहीं नेशनरल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के अनुसार तीव्रता 6.4 रही थी। भूकंप का केंद्र का नेपाल में था। तेज भूकंप के झटके से लोगों में काफी दहशत थी। भूकंप की तीव्रता इतनी जोरदार थी कि लोग अपने घरों से निकलकर सड़कों पर आ गए थे। भूकंप की कंपन कुछ सेकेंड तक महसूस हुई।

दिवाली से पहले केजरीवाल सरकार का तोहफा, इन 80 हजार कर्मचारियों को मिलेगा बोनस

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने दिवाली से पहले अपने सरकारी कर्मचारियों को बोनस देने का एलान किया है। दिल्ली सरकार में कार्यरत ग्रुप बी नॉन गैजेटेड और ग्रुप सी के 80 हजार कर्मियों को इसका लाभ मिलेगा। हर कर्मचारी को 7 हजार रुपये का बोनस दिया जाएगा। इस पर 56 करोड़ रुपये खर्च होंगे। सीएम केजरीवाल ने इस घोषणा के साथ सभी को दिवाली की शुभकामनाएं भी दीं।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने दीवाली पर अपने 80 हजार कर्मचारियों को सात-हजार रुपये बोनस देने का निर्णय लिया है।

किन कर्मचारियों को मिलेगा बोनस?

सीएम अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को इसकी घोषणा करते हुए कहा कि आप सरकार सभी ग्रुप बी गैर राजपत्रित और ग्रुप सी के कर्मचारियों को यह बोनस देगी।

केजरीवाल ने डिजिटल प्रेसवार्ता कर सभी कर्मचारियों को दीवाली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आप सरकार ने गत आठ साल में दिल्ली में शिक्षा-स्वास्थ्य, ढांचागत विकास और जनसेवाओं समेत अन्य क्षेत्रों में जितने शानदार काम किए हैं, उन सभी में इन कर्मचारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इन्हीं की कड़ी मेहनत और काम की बदौलत हम दिल्ली को दिल्ली के लोगों के सपनों का शहर बनाने में सफल हुए हैं। केजरीवाल ने बताया कि इन सभी कर्मचारियों को बोनस देने में 56 करोड़ रुपये का खर्चा आएगा।

इससे त्योहारों में हमारे कर्मचारियों के घरों में खुशियां दोगुनी हो जाएंगी। एक सरकार के रूप हमने अपने कर्मचारियों की जिंदगी बेहतर बनाने के लिए हमेशा प्रयास किया है और ये प्रयास जारी रहेगा।

दिल्ली सरकार के सभी कर्मचारी मेरा परिवार हैं। त्योहारों के इस महीने में हम दिल्ली सरकार के ग्रुप B और ग्रुप C के कर्मचारियों को 7000 रुपये का बोनस दे रहे हैं। सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को दीपावली की अग्रिम शुभकामनाएँ।

दिल्ली सरकार के सभी कर्मचारी मेरा परिवार हैं। त्योहारों के इस महीने में हम दिल्ली सरकार के ग्रुप B और ग्रुप C के कर्मचारियों को 7000 रुपये का बोनस दे रहे हैं। सभी कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को दीपावली की अग्रिम शुभकामनाएं।

दिल्ली के केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान में दी जा रही सिर्फ 7 दिन की दवा, मरीज परेशान

पंजाबी बाग वेस्ट स्थित केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान में दवा के लिए मरीजों को काफी परेशान होना पड़ रहा है। यहां इलाज के लिए रोजाना दिल्ली के हर इलाके से सैकड़ों मरीज पहुंचते हैं। आयुर्वेदिक दवाइयों से कई मरीजों को लाभ मिलता है लेकिन मरीजों के लिए परेशानी की बात यह है कि उन्हें दवा के लिए दिन भर भटकने के बाद दवाइयां बहुत कम दी जा रही हैं।

पश्चिमी दिल्ली। पंजाबी बाग वेस्ट स्थित सेंट्रल आयुर्वेदा इंस्टीट्यूट में दवा के लिए आने वाले मरीजों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यहां इलाज के लिए रोजाना दिल्ली के हर इलाके से सैकड़ों मरीज आते हैं।

औषधियों से मिलने वाली दवाइयों से बहुत कम मात्रा में औषधियां दी जा रही हैं। स्टॉक में बताया गया है कि ऊपर से ही स्टूडियो का स्टॉक कम है। इसे देखते हुए सभी दलितों को लालच दिया जा रहा है, इस कारण से सात दिन की तकलीफ दी जा रही है। यह स्थिति लगभग छह महीने की जारी है।

इस व्यवस्था से परेशान एक रोगी ने बताया कि यहां आने-जाने में दिनभर लग जाता है। इसकी बावजूद स्थिति ऐसी है कि मात्र सात दिन की दवा दी जाती है। ऐसी स्थिति में काम छोड़कर आने वाले मरीजों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

गरीब और मध्यम वर्ग के लोग ही इलाज के लिए सरकारी अस्पतालों का रुख करते हैं। बता दें कि केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1979 में हुई थी और यह केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन काम करता है।

10 नवंबर को मनाया जाएगा 'आयुर्वेद दिवस'

आयुर्वेद दिवस को लेकर आम आदमी के बीच जन-जागरूकता के लिए आयुष मंत्रालय और केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (CARI) दिल्ली के सहयोग से युवा बाइकर्स द्वारा 7 नवंबर को एक रैली का आयोजन किया जाएगा। ईवेंट का थीम है- आयुर्वेद फॉर वन हेल्थ और टैग लाइन है- आयुर्वेद फॉर एवरीवन ऑन एवरीडे।

टूट रहे हैं प्रदूषण के सारे रिकॉर्ड, सांस लेना हो रहा दुश्वार, सरकार दिख रही लाचार

योगेश कुमार गोयल

वायु प्रदूषण के चलते दुनियाभर में प्रतिवर्ष करीब 70 लाख लोगों की असामयिक मृत्यु हो जाती है, जिनमें करीब छह लाख बच्चे भी शामिल होते हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक वातावरण में बढ़ रहा वायु प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य के लिए काफी समस्यादायक स्थिति पैदा कर सकता है।

दिल्ली-एनसीआर की हवा में दीवाली से कुछ दिन पहले ही इस कदर जहर घुल चुका है और हवा इतनी दमघोंटू हो चुकी है कि लोगों को न केवल सांस लेना मुश्किल हो गया है बल्कि अन्य खतरनाक बीमारियों का खतरा भी बढ़ रहा है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार इस साल अक्तूबर में दिल्ली में प्रदूषण का स्तर 2020 के बाद सबसे खराब स्तर पर था लेकिन नवम्बर की शुरुआत से ही प्रदूषण के सारे रिकॉर्ड टूट रहे हैं और दिल्ली में एक प्रकार से सांसों का आपातकाल-सा दिखाई दे रहा है, जहां चारों स्मॉग की घनी चादर छाई है। यह चादर कितनी खतरनाक है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सूर्य की तेज किरणें भी इस चादर को नहीं भेद पा रही हैं। करीब एक सप्ताह से देश के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की वायु गुणवत्ता सूचकांक में तेजी से गिरावट आई है। इस तरह की वायु गुणवत्ता को सेहत के लिए कई प्रकार से बेहद खतरनाक माना जाता है। दिल्ली के कई हिस्सों में तो वायु गुणवत्ता सूचकांक 800 के आंकड़े को भी पार कर चुका है, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित सीमा से कई गुना ज्यादा है। विशेषज्ञों के मुताबिक अभी अगले 15-20 दिनों तक यहां ऐसी ही स्थिति बनी रह सकती है।

वैसे तो दिल्ली के साथ-साथ देश के कई अन्य राज्यों में भी प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है और देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई में भी वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में दर्ज की जा रही है लेकिन दिल्ली पिछले कई वर्षों से दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक बनी हुई है, जिसका सीधा-सा अर्थ है कि करीब 3.3 करोड़ लोगों में वायु प्रदूषण के कारण होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं का गंभीर जोखिम बना हुआ है। लोगों की सांसों पर वायु प्रदूषण का खतरा इतना खतरनाक होता जा रहा है कि वैज्ञानिक अब दिल्ली में साल-दर-साल बढ़ते प्रदूषण के कारण बढ़ रहे स्वास्थ्य संबंधी गंभीर दुष्प्रभावों को लेकर चिंता जताने लगे हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अधिकारियों के मुताबिक आने वाले कुछ दिनों में दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता बहुत खराब रहेगी, जिसका कारण तापमान में कमी और पराली जलाने से होने वाला उत्सर्जन है। केंद्र सरकार के डिसीजन सपोर्ट सिस्टम फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट (डीएसएस) ने पराली जलाए जाने की गतिविधियों में वृद्धि की आशंका जताई है, जिससे अगले कुछ दिनों में वायु गुणवत्ता बेहद खराब होने की आशंका है। चिंता का विषय यह है कि हर साल दिल्ली सहित, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश इत्यादि राज्यों में इस सीजन में खेतों में बड़े स्तर पर पराली जलाई जाती है, जिसके चलते प्रदूषण का यही आलम देखने को मिलता है। यह बेहद चिंता की बात है कि किसानों से खेतों में पराली नहीं जलाए जाने के निरंतर अनुरोधों के बाद भी इस बार दशहरे के मौके पर तो जैसे किसानों में पराली फूंकने की होड़-सी लगी दिखी, वहीं करवा चौथ के मौके पर चांद के दीदार होते ही दिल्ली तथा पड़ोसी राज्यों में लोगों जमकर आतिशबाजी की, जिसने प्रदूषण की स्थिति को और विकराल बनाने में आग में घी का काम किया।

विकास के नाम पर अनियोजित तथा अनियंत्रित निर्माण कार्यों के चलते बिगड़ते हालात, खेतों में जलती पराली, खतरों को जानते-समझते हुए भी की जाने वाली भारी आतिशबाजी तथा वाहनों और औद्योगिक इकाईयों के कारण अत्यधिक प्रदूषित हो रहे वातावरण के भयावह खतरों को हम इसी प्रकार साल-दर-साल झेलने को विवश हैं। हालांकि पर्यावरण तथा प्रदूषण नियंत्रण के मामले में देश में पहले से ही कई कानून लागू हैं लेकिन उनकी पालना कराने के मामले में पर्यावरण एवं प्रदूषण नियंत्रण विभाग में सदैव उदासीनता का माहौल देखा जाता रहा है। देश की राजधानी दिल्ली तो वक्त-बेवक्त 'स्मॉग' से लोगों का हाल बेहाल करती रही है। न केवल दिल्ली-एनसीआर में बल्कि देशभर में वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण का खतरा निरन्तर मंडरा रहा है। वायु, जल तथा अन्य प्रदूषण के कारण अब हर साल देशभर में लाखों लोग जान गंवाते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक मानव निर्मित वायु प्रदूषण के ही कारण प्रतिवर्ष करीब पांच लाख लोग मौत के मुंह में समा जाते हैं।

अब देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जहां लोग धूल, धुएं, कचरे और शोर के चलते बीमार न हो रहे हों। देश के अधिकांश शहरों की हवा में जहर घुल चुका है। पयार्वरण तथा मानवाधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत डेविड आर. बॉयड का कहना है कि विश्वभर में इस समय छह अरब से भी ज्यादा लोग इतनी प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं, जिसने उनके जीवन, स्वास्थ्य और बेहतरी को खतरे में डाल दिया है और सर्वाधिक चिंता की बात यह है कि इसमें करीब एक-तिहाई संख्या बच्चों की है। अपनी बहुचर्चित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने विस्तार से बताया है कि वायु प्रदूषण न केवल फेफड़ों को बल्कि स्वास्थ्य को तमाम अन्य तरीकों से भी प्रभावित करता है। हवा की खराब गुणवत्ता के कारण अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, और बैक्टीरियल संक्रमण के खतरे बढ़ सकते हैं। वायु की खराब गुणवत्ता व्यक्ति में ऑटिज्म, तनाव और स्ट्रोक जैसे तमाम न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर सहित अन्य बीमारियों को भी बढ़ावा देती हैं वायु प्रदूषण के कारण हवा में कई प्रकार की हानिकारक गैसें सम्मिलित हो जाती हैं, जिनसे सिरदर्द, खांसी, जुकाम और एलर्जी जैसी आम समस्याएं भी देखने को मिलती हैं। पर्यावरण, प्रदूषण और स्वास्थ्य पर विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के भयावह खतरों के बारे में विस्तार से जानने के लिए 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक को फ्लिपकार्ट से प्राप्त किया जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायु प्रदूषण के चलते दुनियाभर में प्रतिवर्ष करीब 70 लाख लोगों की असामयिक मृत्यु हो जाती है, जिनमें करीब छह लाख बच्चे भी शामिल होते हैं। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक वातावरण में बढ़ रहा वायु प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य के लिए काफी समस्यादायक स्थिति पैदा कर सकता है, जिससे रेसपिरेटरी, न्यूरोबिहेवियरल, कार्डियोवैस्कुलर तथा इम्यून सिस्टम से संबंधित बीमारियां हो सकती हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट शिकागो (ईपीआईसी) के निदेशक और अर्थशास्त्र के प्रोफेसर माइकल ग्रीनस्टोन तथा उनकी टीम द्वारा किए गए एक अध्ययन के बाद कुछ समय पहले कहा जा चुका है कि भारत की कुल आबादी का बड़ा हिस्सा ऐसी जगहों पर रहता है, जहां पार्टिकुलेट प्रदूषण का औसत स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से ज्यादा है। देश में करीब 84 फीसदी व्यक्ति ऐसी स्थानों पर रहते हैं, जहां प्रदूषण का स्तर भारत द्वारा तय मानकों से अधिक है और भारत की एक चौथाई आबादी बेहद प्रदूषित वायु में जीने को मजबूर है। चूंकि वायु प्रदूषण का प्रभाव मानव शरीर पर इतना घातक होता है कि सिर के बालों से लेकर पैरों के नाखून तक इसकी जद में होते हैं, इसीलिए शिकागो विश्वविद्यालय के माइकल ग्रीनस्टोन कहते हैं कि वायु प्रदूषण पर अब गंभीरता से ध्यान देने की जरूरत है ताकि करोड़ों-अरबों लोगों को अधिक समय तक स्वस्थ जीवन जीने का हक मिल सके।

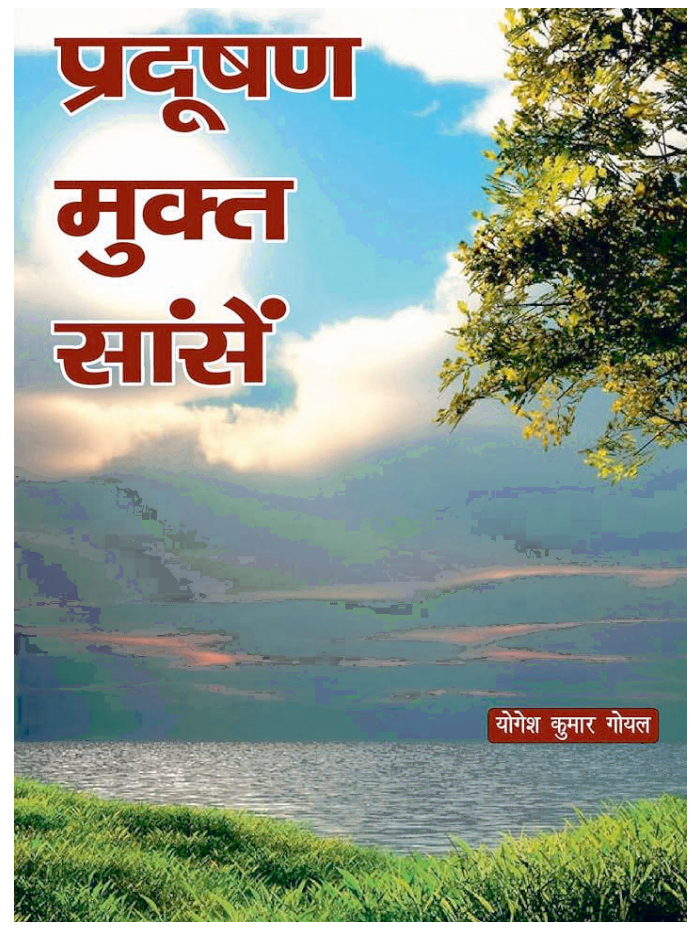

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरण मामलों के जानकार तथा 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के लेखक हैं)

हर साल पड़ रही प्रदूषण की मार, फिर भी नहीं होते पुख्ता इंतजाम

परिवहन विशेष न्यूज

हर साल लोगों को सर्दी बढ़ने पर इसी जहरीली हवा में रहना पड़ता है। इसके बाद भी अधिकारी प्रदूषण रोकथाम के पुख्ता इंतजाम नहीं करते। रोकथाम के इंतजाम नहीं कि गए तो इस बार एक्यूआइ दिवाली तक आपात स्थिति तक पहुंच जाएगा। पिछले कई साल से प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में पहुंच रहा है। इसकी रोकथाम के हर साल दावे तो किए जाते हैं।

गाजियाबाद। वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) गंभीर श्रेणी में पहुंचना जिले के लोगों के लिए कोई नई बात नहीं है। हर साल लोगों को सर्दी बढ़ने पर इसी जहरीली हवा में रहना पड़ता है। इसके बाद भी अधिकारी प्रदूषण रोकथाम के पुख्ता इंतजाम नहीं करते।

पाबंदी लागू हुए बीत चुके हैं करीब 30 दिन

जिले में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) लागू हुए 36 दिन व पाबंदी लागू हुए करीब 30 दिन बीत चुके हैं। इसके बाद भी लोगों को अभी तक एक दिन भी शुद्ध हवा नहीं मिल सकी है। हवा संतोषजनक, खराब, बेहद खराब श्रेणी को पार करती हुई गंभीर श्रेणी में बनी हुई है।

रोकथाम के इंतजाम नहीं कि गए तो इस बार एक्यूआइ दिवाली तक आपात स्थिति तक पहुंच जाएगा। पिछले कई साल से प्रदूषण का स्तर गंभीर श्रेणी में पहुंच रहा है। इसकी रोकथाम के हर साल दावे तो किए जाते हैं पर जमीनी स्तर पर इसका असर दिखाई नहीं देता।

प्रदूषण रोकने के नाम पर सिर्फ जुर्माना लगाया जा रहा है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जीडीए, नगर निगम समेत जिम्मेदार विभाग मिलकर ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं। उड़ती धूल को रोकने के लिए सड़कों पर पानी का छिड़काव तक नहीं किया जा रहा।

इस साल केवल 15 दिन मिली शुद्ध हवा

जिले की हवा सालभर में ज्यादातर दिन खराब स्थिति में ही रहती है। पिछले साल 365 दिन में से केवल 12 व इस साल अभी तक 15 दिन ही लोगों को शुद्ध हवा मिली है। बाकी दिन लोगों की सांसें फूली रहीं।

पांच साल से अधिकतम प्रदूषण की स्थिति

वर्ष	AQI
2018	488
2019	499
2020	484
2021	485
2022	487

श्रेणी वर्ष 2022 वर्ष 2023

अच्छी	12	15
संतोषजनक	54	71
मध्यम	102	132
खराब	132	65
बेहद खराब	63	21
गंभीर	02	00

(नोटः वर्ष 2023 का आंकड़ा अक्टूबर तक है)

पिछले वर्ष कितने दिन, किस श्रेणी में रही हवा

श्रेणी	वसुंधरा	लोनी	इंदिरापुरम	संजयनगर
खराब	129	86	110	122
बेहद खराब	73	85	37	49
गंभीर	08	25	02	01

बीते वर्ष किस क्षेत्र में कितने दिन अच्छी रही हवा

स्टेशन	दिन
वसुंधरा	11
लोनी	10
इंदिरापुरम	13
संजयनगर	28

सर्दी बढ़ने पर प्रदूषण बढ़ जाता है। दीवाली पर प्रदूषण का स्तर बढ़ने से रोकने के लिए विशेष टीम गठित की जाएंगी। टीम के अधिकारी क्षेत्रवार निगरानी करेंगे।

-विकास मिश्र, क्षेत्रीय अधिकारी, यूपीपीसीबी।

निजी स्कूल में हंगामा, 'जय श्रीराम' का उद्घोष करने पर छात्रों को पीटने का आरोप

गुरुग्राम के सेक्टर-110 में संचालित एक निजी स्कूल में हंगामा हो गया। घटना की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची है। जानकारी के मुताबिक यहां स्कूल के एक मुस्लिम अध्यापक पर जय श्रीराम का उद्घोष करने पर विद्यार्थियों को पीटने का आरोप लगा है। सूचना मिलते ही स्कूल में हिंदू संगठन के प्रतिनिधि पहुंचे हैं। मामला बढ़ता देख मौक पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया है।

गुरुग्राम। गुरुग्राम के सेक्टर-110 में संचालित एक निजी स्कूल में हंगामा हो गया। घटना की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची है। जानकारी के मुताबिक, यहां स्कूल के एक मुस्लिम अध्यापक पर जय श्रीराम का उद्घोष करने पर विद्यार्थियों को पीटने का आरोप लगा है। सूचना मिलते ही स्कूल में हिंदू संगठन के प्रतिनिधि पहुंचे हैं। मामला बढ़ता देख मौक पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया है।

दुकानदार से पैसे को लेकर हुआ विवाद, नाबालिग ने दो लोगों को मारी गोली; गिरफ्तार

गुरुग्राम। गांव गढ़ी हरसरू में शनिवार को दुकानदार से पैसे को लेकर हुए विवाद में नाबालिग ने दो लोगों को गोली मार दी। गोली दुकानदार का न लगकर उसके साथ बैठे युवक को लग गई थी। इसके बाद आरोपित ने जाते हुए दूसरे युवक को गोली मार दी। दुकानदार की शिकायत पर सेक्टर-10 थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर नाबालिग को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित के पास से एक पिस्टल और दो खाली कारतूस बरामद हुए है। दुकानदार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि शनिवार को एक युवक इनकी दुकान पर सामान लेने के लिए आया था। सामान देने के बाद इन्होंने पैसे मांगे तो नाबालिग से उनका विवाद हो गया। इसी दौरान नाबालिग ने दुकानदार के ऊपर गोली चला दी।

नोएडा अथॉरिटी की प्लानिंग पर खड़े हो रहे सवाल, कमरों में बैठकर सेक्टर का ले-आउट बना रहे अधिकारी

नोएडा अथॉरिटी की प्लानिंग पर सवाल खड़े होने लगे हैं। अब हालात ऐसे होने लगे है कि औद्योगिक व संस्थागत इकाइयों को विस्तार देने के लिए नोएडा प्राधिकरण ने एक्सप्रेस-वे के किनारे नई इंडसट्रियल टाउनशिप बना रहा है जिसमें नियोजन विभाग की खामियां उजागर होनी शुरू हो चुकी है। बोर्ड बैठक में सेक्टर-161 162 164 का लेआउट प्लान संशोधन करने का प्रस्ताव शामिल किया गया है।

नोएडा। नोएडा प्राधिकरण के नियोजन पर सवाल खड़ा होने लगा है, क्योंकि कमरों में बैठकर अधिकारी सेक्टर का लेआउट कटा देते है, लेकिन मौके पर जमीन नहीं होती है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि किसी सेक्टर का नियोजन करने से पहले उसका भौतिक परीक्षण इंजीनियरिंग विंग से नहीं कराया जाता है या नहीं।

यदि कराया जाता है तो दोनों विभागों की संलिप्तता उजागार हो रही है। यदि नियोजन भौतिक परीक्षण नहीं करता है, सीधे सेक्टर काट देता है तो यह बहुत ही गंभीर मामला है, जिससे निवेशकों से सीधे परेशान किया जा रहा है, भूखंड आंवटन के बाद उद्यमियों का शोषण हो रहा है।

नियोजन विभाग की खामियां उजागर

अब हालात ऐसे होने लगे है कि औद्योगिक व संस्थागत इकाइयों को विस्तार देने के लिए नोएडा प्राधिकरण ने एक्सप्रेस-वे के किनारे नई इंडसट्रियल टाउनशिप बना रहा है, जिसमें नियोजन विभाग की खामियां उजागर होनी शुरू हो चुकी है।

बोर्ड बैठक में सेक्टर-161, 162, 164 का लेआउट प्लान संशोधन करने का प्रस्ताव शामिल किया गया है, जिसमें यह पाया गया है कि नियोजन ने एक सेक्टर को काटने के लिए जितनी जमीन लेट आउट में दिखाई है, अब इंजीनियरिंग के भौतिक परीक्षण में कम मिली है। यहां तक की भूखंड काट दिया गया, लेकिन सेक्टर-162, 264 में सड़क के लिए ही जमीन नहीं है।

ऐसे में ग्रीन बेल्ट का लैंड यूज बदलने की नौबत आ गई है, जिसने पूरी प्राधिकरण में पूरे सिस्टम को कटघरे में खड़ा कर दिया है। नोएडा प्राधिकरण अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी सतीश पाल से बातचीत। 400-फोटो-सात-कुंदन तिवारी

विवाहिता की हत्या का प्रयास, बेहोश होने पर मरा समझकर छोड़ा

पीड़िता का आरोप है कि 15 नवंबर 2022 में आरोपितों ने मारपीट की और गले में साड़ी से फंदा लगाकर हत्या करने की कोशिश की। बेहोश होने के चलते आरोपित मरा समझकर छोड़कर भाग गए। ससुरालवालों ने पिता को फोन करके सूचना दे दी। होश में आने पर माता-पिता को आपबीती बताई। तब से पीड़िता मायके में रह रही है।

नोएडा। अतिरिक्त दहेज में पांच लाख रुपये और कार की मांग पूरी न होने पर ससुराल पक्ष के लोग विवाहिता की जान के दुश्मन बन गए। पीड़िता ने पति समेत पांच लोगों पर दहेज मांगने और हत्या के प्रयास का आरोप लगाते हुए कोर्ट के आदेश पर मुकदमा दर्ज कराया है।

शादी में पिता ने दिया था दहेज

दनकौर की नेहा ने दर्ज कराई एफआइआर में बताया कि उनका विवाह फरवरी 2022 में बल्लभगढ़ हरियाणा के राहुल से हुआ था। शादी में पिता ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार दहेज दिया था।

आरोप है कि पति राहुल, सास मुन्नी देवी, ससुर मोहन, ननद कोमल, देवर मोहित खुश नहीं थे। आए दिन मारपीट करते और मानसिक शोषण करते हैं। अतिरिक्त दहेज में पांच लाख रुपये व एक कार की मांग करते हैं।

क्या है मामला?

पीड़िता का आरोप है कि 15 नवंबर 2022 में आरोपितों ने मारपीट की और गले में साड़ी से फंदा लगाकर हत्या करने की कोशिश की। बेहोश होने के चलते आरोपित मरा समझकर छोड़कर भाग गए।

लोनी में अवैध पटाखा फैक्ट्री का भंडाफोड, 150 किलो से अधिक विस्फोटक बरामद; संचालक गिरफ्तार

गाजियाबाद के लोनी इलाके में अवैध पटाखा फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया गया। पुलिस वहां से 15 किलो से अधिक का विस्फोटक बरामद किया है। यह फैक्ट्री बंद मकान में चल रहा था। फैक्ट्री संचालक को अंकुर विहार थाना क्षेत्र के डाबर तालाब के पास से गिरफ्तार कर लिया। आशंका थी कि अगर यहां विस्फोट होता तो बड़ी हानि हो सकती थी।

गाजियाबाद। जिले के कोतवाली क्षेत्र के अशोक विहार में चल रही अवैध पटाखा बनाने की फैक्ट्री का रविवार को पुलिस ने भंडाफोड़ कर संचालक को गिरफ्तार किया है। मौके से 310 डिब्बे निर्मित पटाखे और 150 किलो से अधिक पटाखा बनाने की सामग्री बरामद की है। अवैध रूप से चल रही पटाखा फैक्ट्रियों पर कार्रवाई नहीं होने पर पुलिस को कठघरे में खड़ा करते हुए दैनिक जागरण ने प्रमुखता के साथ खबर प्रकाशित की थी, जिसके बाद पुलिस की नींद टूटी और कार्रवाई की।

पुलिस रविवार को अशोक विहार में एक बंद मकान पर पहुंची तो बाहर से ताला लगा हुआ था। पुलिस ने ताला तोड़ा तो उसमें पटाखे और पटाखे बनाने की सामग्री रखी थी। पुलिस ने पटाखे और अन्य सामग्री को जब्त कर लिया। फैक्ट्री संचालक को अंकुर विहार थाना क्षेत्र के डाबर तालाब के पास से गिरफ्तार कर लिया।

आरोपी की पहचान डाबर तालाब के सईद के रूप में हुई है। वहीं, लोनी अंकुर विहार थाने की पुलिस ने अवैध रूप से पटाखे बेच रहे दिल्ली के अशोक कुमार को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के पास से चार बोरी पटाखे बरामद किए गए हैं।

चिंगारी लगते ही कई घर हो जाते जमींदोज

विशेषज्ञों की मानें तो 150 किलो से अधिक पटाखा बनाने की सामग्री से बड़ा विस्फोट हो सकता था। यदि विस्फोट हो जाता तो आसपास के मकान भी चपेट में आ जाते, जिससे बड़ी घटना हो सकती थी। सूत्रों की मानें तो अप्रशिक्षित लोग पटाखा बनाने का काम कर रहे थे। बताया गया कि ये लोग पटाखा बनाते समय मकान में बीड़ी भी पीते थे।

पुलिस तक को नहीं लगी भनक

पुलिस जांच में आया है कि एक सप्ताह से यहां पटाखे बनाए जा रहे थे, लेकिन पुलिस के इसकी भनक नहीं लगी। पुलिस ने बताया कि आरोपित पूर्व में फर्रुखनगर में पटाखे बनाता था। वहां पुलिस ने कार्रवाई शुरू की तो वह लोनी के अशोक विहार में पटाखा बनाने लगा। आरोपी फर्रुखनगर से ही पटाखा बनाने की सामग्री लाता था। वह दिल्ली, गाजियाबाद, बुलंदशहर, हापुड़ और मेरठ तक जन्मदिन, शादी, पार्टी के साथ त्योहार पर पटाखे बेचता था।

पुलिस ने पटाखा बनाने की फैक्ट्री पकड़ी है। मकान में पटाखे बनाए जा रहे थे। फैक्ट्री संचालक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

-रजनीश कुमार उपाध्याय, सहायक पुलिस आयुक्त, लोनी

भारत के प्रयासों से मिली मोटे अनाज को अंतरराष्ट्रीय पहचान

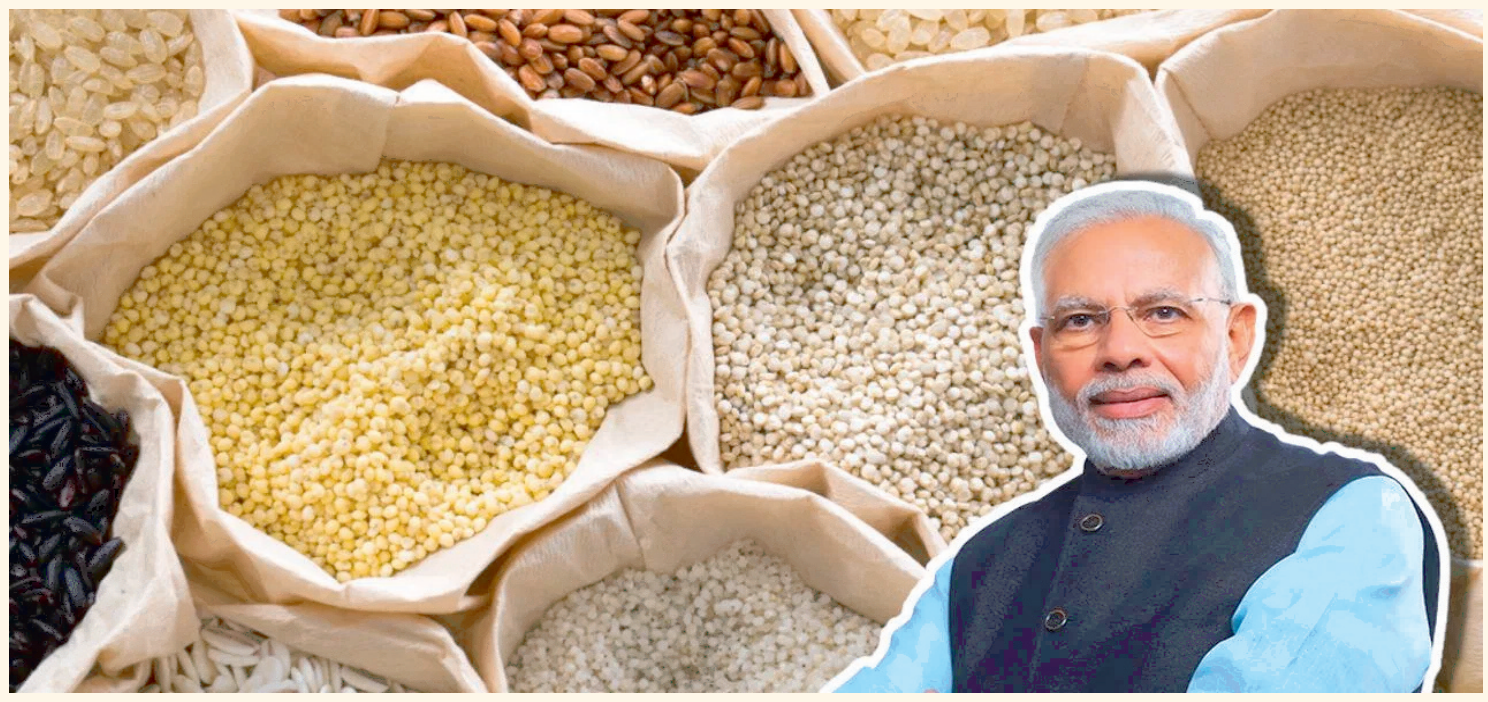

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

हरित क्रांति समय की मांग थी और आज भी है। पर अब समूची दुनिया में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों और नित नई बीमारियों से त्रस्त होने के कारण विकल्प तलाशा जाने लगा है और मोटे अनाज को दुनिया के देश बेहतर विकल्प और आशा के रूप में देख रहे हैं।

मोटा अनाज यानि श्रीअन्न आज दुनिया की पसंद बनता जा रहा है। दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि आज समूची दुनिया 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट ईयर के रूप में मना रही है। मोटे अनाज के महत्व और पोषकता को देखते हुए ही इसे श्रीअन्न कहकर पुकारा गया। देखा जाए तो जब 2018 में भारत ने मोटे अनाज को पोषक अनाज घोषित करने के लिए विश्वव्यापी अभियान चलाया तब पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थे कि संयुक्त राष्ट्र संघ मोटे अनाज के महत्व को समझते हुए 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित कर देगा। यह भी लगभग असंभव लगता था कि दुनिया के देश इतनी जल्दी मोटे अनाज के प्रति जागरूक होंगे। दरअसल हमारे खान-पान के चलते लोग एक के बाद एक बीमारियों से दो चार होने लगे हैं, ऐसे में मोटा अनाज एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है। पर जिस तरह से अभियान चलाकर मोटे अनाज को प्रमोट किया गया है उससे देश-विदेश में मोटे अनाज का गुणगान होने लगा है। मोटापा, डायबिटीज, विटामिन्स की कमी, बढ़ती हार्ट डिजिजेज, एनिमिया, पाचन संबंधी दिक्कत और कैल्शियम की कमी या यों कहें कि अच्छा खाने के बाद भी खोखले होते शरीर के कारण केमिकल्स पर आधारित दवाओं से अलग हटकर अब लोग मोटे अनाज में विकल्प खोजने लगे हैं। खरीफ की प्रमुख फसल बाजरा का तो इस साल और अधिक उत्पादन होने जा रहा है। किसान इससे उत्साहित है तो स्टार्टअप्स और खाद्य प्रसंस्करण इकाईयां बेहद उत्साहित हैं।

दरअसल गई शताब्दी के छठें-सातवें दशक तक हमारे यहां खासतौर से गांवों का मुख्य भोजन मोटा अनाज ही रहा है। 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट के विकल्प के रूप में हरित क्रांति का दौर आरंभ हुआ और ऐसे में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता बनी और इसके लिए गेहूं को प्रमुख विकल्प माना गया। इसके बाद एक ओर गेहूं के आयात, गेहूं के उत्पादन बढ़ाने और उत्पादन बढ़ाने के नाम पर रासायनिक उर्वरकों का दौर शुरू हुआ। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रचार तंत्र को एग्रेसिव किया गया और आज हमारे कृषि वैज्ञानिकों, नीति नियंताओं और अन्नदाता की मेहनत से देश खाद्यान्न को लेकर आत्मनिर्भर बन गया है। कोरोना त्रासदी से लेकर अब तक जरूरतमंद लोगों तक निःशुल्क खाद्यान्न की उपलब्धता बड़ा सहारा बनी है। हरित क्रांति समय की मांग थी और आज भी है। पर अब समूची दुनिया में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों और नित नई बीमारियों से त्रस्त होने के कारण विकल्प तलाशा जाने लगा है और मोटे अनाज को दुनिया के देश बेहतर विकल्प और आशा के रूप में देख रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि एक समय था जब मोटा अनाज प्रमुख भोजन होता था। आज भी दुनिया में कुल उत्पादित मोटे अनाज में हमारे देश की भागीदारी 41 प्रतिशत है। राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि प्रमुख राज्य हैं। आज मोटे अनाज के निर्यात में भी भारत प्रमुख देश है। हमारे देश से बीते साल 2.69 करोड़ डॉलर का मोटा अनाज अमेरिका को निर्यात किया गया है। मोटे रूप से 13 प्रकार के अनाज को मोटे अनाज के रूप में माना जाता है। इनमें से प्रमुख रूप से 8 अनाजों- बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदों को माना जाता है। कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय के वर्ष 2023-24 के पहले अनुमान के अनुसार खरीफ पोषक मोटे अनाजों का उत्पादन 351.37 लाख टन अनुमानित है जोकि 350.91 लाख टन औसत मोटे अनाजों की तुलना में थोड़ा-सा अधिक है। वर्ष 2023-24 के दौरान श्री अन्न का उत्पादन 126.55 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है।

मोटे अनाज को प्रमोट करने के विश्वव्यापी प्रयास आरंभ हो गए हैं। युवा एंटरप्रोन्योर स्टार्टअप्स के माध्यम से आगे आ रहे हैं। लोगों को मिलेट रेसिपी भाने भी लगी है। लोग इनके महत्व को समझने लगे हैं। पुरानी पीढ़ी के लोगों को याद होगा कि राजस्थान में तो खासतौर से एक समय था जब घर पर मेहमान आने पर ही गेहूं की चपाती बनती थी। धीरे-धीरे मोटे अनाज का उत्पादन और उपयोग दोनों ही प्रभावित हुए। यह सब तो तब रहा जब कि बाजरा आदि मोटे अनाज के खेती में कम पानी और कम लागत आती है तो दूसरी और मोटा अनाज प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्द्धक तत्वों से भरपूर रहे हैं और इनकी उपयोगिता को आज वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं। मौसम के अनुसार खेती होने से फसलों के तासीर भी पैदावार पक कर बाजार में आने के बाद उसके उपयोग से तय होती रही है। मोटा अनाज खासतौर से बाजरा खरीफ की प्रमुख फसल है। अब आसानी से समझा जा सकता है कि खरीफ की फसल पक कर तैयार हो जाती है तो उस समय तक सर्दी का मौसम आरंभ हो जाता है। सर्दी में बाजरा कितना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है इसको बताने की आवश्यकता नहीं है तो गरमी में बाजरे की राबड़ी की अपनी पहचान हैं। समय का बदलाव देखिए कि गांव-गरीब का भोजन आज पंच सितारा होटलों में लक्जरी व्यंजन बन चुका है। शादियों में बाजरे की खिचड़ी या छाछ-राबडी प्रमुखता से परोसी जाने लगी है तो इसका मतलब भी समझना होगा।

देश में कृषि क्षेत्र में निरंतर सुधार हो रहे हैं। कृषि बजट में साल दर साल उल्लेखनीय बढ़ोतरी की जा रही है। अब कृषि वैज्ञानिकों के सामने नई चुनौती मोटे अनाज की उन्नत व गुणवत्तापूर्ण किस्में विकसित करने की है जिसे सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है, इस क्षेत्र में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है और किसानों को मोटे अनाज के उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक प्रेरित करने के समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। आज दुनिया के देश मोटे अनाज को एक बार फिर से भविष्य का अनाज देख रहे हैं तो फिर देश दुनिया में मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के समन्वित प्रयास किये जा रहे हैं।

चौथी जेनरेशन की Maruti Suzuki Swift टेस्टिंग के दौरान हुई स्पॉट, जानें संभावित फीचर्स के बारे में

2024 Maruti Suzuki Swift को पहले की तरह 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड के-सीरीज पेट्रोल इंजन मिलेगा। जनकारों का कहना है कि इस पावरट्रेन को लो-स्पेक ट्रिम्स में पेश किया जाएगा। वहीं इसे पूरी तरह से नया 1.2 लीटर 3-सिलेंडर स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है जिसे टोयोटा के सहयोग से विकसित किया गया है। इसे पहले भी विदेशी धरती पर कई बार टेस्टिंग के दौरान देखा गया है।

मारुति सुजुकी स्विफ्ट मारुति की पॉपुलर कारों में से एक है। यह गाड़ी जल्द ही चौथे जेनरेशन में अपडेट होने के लिए तैयार है।

चौथी जेनरेशन की मारुति सुजुकी स्विफ्ट ने 2023 जापान मोबिलिटी शो में कॉन्सेप्ट फॉर्म में अपनी वैश्विक शुरुआत की। अब, कुछ ही दिनों बाद, कार को पहली बार भारत में परीक्षण के दौरान देखा गया है। आइये जानते हैं इससे जुड़े संभावित बदलावों के बारे में।

2024 Maruti Suzuki Swift बदलाव

नई पीढ़ी की स्विफ्ट को पहले भी विदेशी धरती पर कई बार टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। कार के इंटीरियर और एक्सटीरियर में कई अपडेनेट हो वाले हैं। वहीं ,इसकी इक्विपमेंट लिस्ट को भी पूरी तरह से अपडेट किया जाएगा। उम्मीद है कि अपडेटेड Swift में फिर से डिजाइन किया गया फ्रंट फेशिया, नए एलईडी हेडलैम्प डीआरएल और एक अपडेटेड बम्पर मिलता है। इसमें नए डिजाइन किए गए अलॉय व्हील, अपडेटेड एलईडी टेल लैंप और बम्पर वगैरह भी मिलेंगे। डायमेंशनल बदलावों के साथ नई Swift अपडेटेड लाइटवेट हार्टेक्ट प्लेटफॉर्म पर आधारित हो सकती है।

कितना दमदार होगा इसका इंजन ?

2024 Maruti Suzuki Swift को पहले की तरह 1.2 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड के-सीरीज पेट्रोल इंजन मिलेगा। जनकारों का कहना है कि इस पावरट्रेन को लो-स्पेक ट्रिम्स में पेश किया जाएगा। वहीं इसे पूरी तरह से नया 1.2 लीटर, 3-सिलेंडर स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है, जिसे टोयोटा के सहयोग से विकसित किया गया है। दावा किया गया है कि नई स्विफ्ट 1 लीटर पेट्रोल में 35 से 40 किमी प्रति लीटर का माइलेज देने में सक्षम होगी। हालांकि इस गाड़ी से जुड़ी सभी खास जानकारी कंपनी जब इसे लॉन्च करेगी तभी सामने आएगी।

टोयोटा की नई कार के लिए करना पड़ेगा इंतजार, नवंबर 2023 में हाईराइडर सीएनजी और रियूमियोन सीएनजी पर तगड़ा वेटिंग पीरियड

टोयोटा की लेटेस्ट एमपीवी के सीएनजी वर्जन की डिमांड इसके स्टैंडर्ड वर्जन से ज्यादा है। रुमियन सीएनजी पर वेटिंग पीरियड 18 महीने या डेढ़ साल तक जा सकती है यह इस बात पर निर्भर करता है कि खरीदार ने इसे कहां बुक किया है। वहीं इनोवा हाईक्रॉस के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट का वेटिंग पीरियड 15 महीने तक बढ़ गया है।

नईदिल्ली। अगर आप इस महीने टोयोटा की नई कार घर लाने की सोच रहे हैं, तो इससे पहले कंपनी के प्रोडक्ट्स पर होने वाले लंबे वेटिंग पीरियड के बारे में जान लीजिए। कार निर्माता ने अपने सभी मॉडलों के लिए अस्थायी प्रतीक्षा अवधि का खुलासा किया है।

कुछ ऐसी कारें हैं, जिनकी डिलीवरी के लिए आपको अगली दिवाली तक का इंतजार करना पड़ सकता है। आइए, Rumion CNG, Urban Cruiser HyRyder CNG, Innova HyCross hybrid और Toyota Vellfire जैसी कारों की प्रतीक्षा अवधि के बारे में जान लेते हैं।

Toyota Rumion CNG

टोयोटा की लेटेस्ट एमपीवी के सीएनजी वर्जन की डिमांड इसके स्टैंडर्ड वर्जन से ज्यादा है। इसे इस साल अगस्त में 10.29 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर लॉन्च किया गया था और ये पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट में बेची जाती है। रुमियन सीएनजी पर वेटिंग पीरियड 18 महीने या डेढ़ साल तक जा सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि खरीदार ने इसे कहां बुक किया है।

हाई डिमांड के कारण, टोयोटा को सितंबर में रूमियन ई-सीएनजी संस्करण के लिए अस्थायी रूप से बुकिंग रोकनी पड़ी थी। रुमियन को मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन विकल्पों के साथ 1.5-लीटर के-सीरीज पेट्रोल इंजन से पावर मिलती है।

Toyota Urban Cruiser HyRyder CNG

टोयोटा की कॉम्पैक्ट एसयूवी अर्बन क्रूजर हायराइडर के सीएनजी संस्करण की भारत में जापानी कार निर्माता द्वारा पेश किए जाने वाले मॉडलों में दूसरी सबसे लंबी प्रतीक्षा अवधि है। कार निर्माता के मुताबिक, E-CNG HyRyder SUV को घर ले जाने के लिए 16 महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। इस साल जनवरी में, टोयोटा ने HyRyder SUV का CNG अवतार में 13.23 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) की शुरुआती कीमत पर पेश किया था।

Toyota Innova HyCross hybrid

इनोवा हाईक्रॉस के स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट का वेटिंग पीरियड 15 महीने तक बढ़ गया है। ये एमपीवी, टोयोटा की भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार है और इसे पेट्रोल व स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड दोनों ही वेरिएंट में पेश किया गया है। टोयोटा ने पिछले साल दिसंबर में भारत में इनोवा हाईक्रॉस को स्ट्रान्ग हाइब्रिड वेरिएंट के साथ लॉन्च किया था, जिसकी कीमत 24.01 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) थी।

Toyota Vellfire

भारत में जापानी ऑटो दिग्गज के सबसे महंगे मॉडल वेलफायर पर भी लंबी प्रतीक्षा अवधि है। टोयोटा के अनुसार, खरीद के स्थान के आधार पर, नई वेलफायर की डिलीवरी के लिए लगभग 15 महीने तक इंतजार करना पड़ सकता है।

Reliance Jio की इस डिवाइस से बेस वेरिएंट में मिलेंगे लग्जरी कार जैसे स्मार्ट फीचर्स,

रिलायंस ने JioMotive obd device लॉन्च की है। एक बार इंस्टॉल हो जाने पर डिवाइस ई-सिम का उपयोग करके Jio नेटवर्क से कनेक्ट हो जाता है जिससे अलग सिम कार्ड या डेटा प्लान की आवश्यकता नहीं होती है। आइए जान लेते हैं कि जिओ की ये डिवाइस कितनी खास है इसकी कीमत क्या है और ये आपके लिए कितनी उपयोगी साबित हो सकती है।

नईदिल्ली। Reliance Jio ने हाल ही में एक नया पॉकेट-साइज, आसानी से इंस्टॉल होने वाला OBD (ऑन-बोर्ड डायग्नोस्टिक्स) डिवाइस लॉन्च किया है, जो किसी भी कार को स्मार्ट व्हीकल में बदल सकता है। ये एक प्लग एंड प्ले डिवाइस है और कार के ओबीडी पोर्ट में प्लग हो जाता है, जो आमतौर पर डैशबोर्ड के नीचे स्थित होता है।

एक बार इंस्टॉल हो जाने पर, डिवाइस ई-सिम का उपयोग करके Jio नेटवर्क से कनेक्ट हो जाता है, जिससे अलग सिम कार्ड या डेटा प्लान की आवश्यकता नहीं होती है। आइए, जान लेते हैं कि जिओ की ये डिवाइस कितनी खास है, इसकी कीमत क्या है और ये आपके लिए कितनी उपयोगी साबित हो सकती है।

JioMotive की कीमत

JioMotive रिलायंस डिजिटल की आधिकारिक वेबसाइट पर 4,999 रुपये में उपलब्ध है। इसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म Amazon और JioMart से भी खरीदा जा सकता है। पुरानी कारों और बेस मॉडल्स में जिओ की ये डिवाइस काफी कारगर साबित होने वाली है।

JioMotive की खासियत

JioMotive की मदद से आप उन एडवांस फीचर्स का उपयोग कर सकते हैं, जो नई गाड़ियों के टॉप-स्पेक मॉडल्स में पेश किए जाते हैं। आइए, इसके 5 सबसे बड़े फायदों के बारे में जान लेते हैं।

JioMotive की मदद से आप रियल टाइम में अपनी कार के स्थान को ट्रैक कर सकते हैं। ये कार के ठिकाने की निगरानी करने, परिवार और दोस्तों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और चोरी को रोकने में सहायक हो सकता है।

Geo-Fencing

JioMotive के साथ यूजर्स, मैप पर वर्चुअल बाउंड्री सेट कर सकते हैं। जब उनकी कार इन क्षेत्रों में प्रवेश करेगी या बाहर निकलेगी तो उन्हें अलर्ट प्राप्त होगा, जिससे आपका वाहन सुरक्षित रहेगा।

Remote Diagnostics

JioMotive की मदद से आप दूर से ही कार के परफॉरमेंस और हेल्थ की निगरानी कर सकते हैं। इसकी मदद से आपके व्हीकल की मेंटेनेंस कॉस्ट भी कम होने वाली है।

डिजिटल कौशल से बढ़े रोजगार के मौके

डा. जयंती लाल भंडारी

इन दिनों देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और रोजगार से संबंधित विषयों पर प्रकाशित हो रही विभिन्न रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि देश में अर्थव्यवस्था के बढ़ने, डिजिटल विकास तथा गिग अर्थव्यवस्था के कारण ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर कम हो रही है और रोजगार के नए मौके बढ़ रहे हैं।

रोजगार की बदलती हुई डिजिटल दुनिया में भारत पूरी तरह से लाभ की स्थिति में है। ऐसे में नई पीढ़ी को अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आईटी दक्षता, कोडिंग स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कौशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अब देश में स्किल इंडिया डिजिटल से कौशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे'

इन दिनों देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और रोजगार से संबंधित विषयों पर प्रकाशित हो रही विभिन्न रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि देश में अर्थव्यवस्था के बढने, डिजिटल विकास तथा गिग अर्थव्यवस्था के कारण ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर कम हो रही है और रोजगार के नए मौके बढ़ रहे हैं। हाल ही में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के द्वारा प्रकाशित ताजा रिपोर्ट के मुताबिक इस वर्ष 2023 में ग्रामीण और शहरी दोनों ही जगहों पर बेरोजगारी दरों में कमी आई है। संगठित क्षेत्रों में भी वर्ष 2020 के सितंबर माह के बाद रोजगार की सबसे अच्छी स्थिति दिख रही है। रिपोर्ट के मुताबिक घरेलू मांग में लगातार मजबूती की बदौलत पिछले 10 महीनों से रोजगार का पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) 50 से ऊपर चल रहा है। इस इंडेक्स के 50 से ऊपर रहने का मतलब है कि रोजगार में सकारात्मक बढ़ोतरी हो रही है। अर्थव्यवस्थाओं के रोजगार संकेतकों के मुताबिक आने वाले महीनों में रोजगार में बढ़ोतरी जारी रहने की उम्मीद की जा रही है।

निश्चित रूप से कौशल और डिजिटल स्किल्स पर आधारित नए दौर के रोजगार के मौके छलांगे लगाकर बढ़ रहे हैं। 12 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कौशल विकास मंत्रालय के द्वारा नई दिल्ली में आयोजित कौशल दीक्षा समारोह को वर्चुअली संबोधित करते हुए कहा कि पिछले एक दशक में सरकार ने कौशल विकास व डिजिटल स्किल्स विकास में सबसे अधिक निवेश करके रोजगार निर्माण को नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। यही कारण है कि देश में बेरोजगारी पिछले छह वर्षों के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी तेजी से कम हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि तेजी से बढ़ती भारत की अर्थव्यवस्था में युवाओं के लिए रोजगार की नई संभावनाएं पैदा हो रही हैं।

अब भारत के द्वारा कुशल मानव शक्ति का पावर सेंटर बनने के जो प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं, उनसे निर्मित नए दौर के रोजगार के अधिक मौकों से नई पीढ़ी लाभान्वित होगी। हाल ही में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक देश में पिछले छह वर्षों में बेरोजगारी दर छह फीसदी से घटकर 3.2 फीसदी पर आ गई है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में बेरोजगारी दर में बड़ी कमी आई है। निश्चित रूप से जहां ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दर घटाने में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) की अहम भूमिका है, वहीं शहरी बेरोजगारी घटाने में कौशल विकास और डिजिटल स्किल्स की अहम भूमिका दिखाई दे रही है। उल्लेखनीय है कि देश में शहरी बेरोजगारी दर चालू वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में 6.6 प्रतिशत रह गई है, जबकि कोविड के दौरान वित्त वर्ष 2021-22 की अप्रैल-जून तिमाही में शहरी बेरोजगारी दर 12.6 प्रतिशत दर्ज की गई थी, उसके बाद से शहरी इलाकों में बेरोजगारी दर लगातार कम हो रही है। यदि हम कोरोनाकाल के बाद शहरी रोजगार बढने के परिदृश्य को देखें तो पाते हैं कि जहां एक ओर शहरी क्षेत्रों में गिग इकोनॉमी में रोजगार छलांगे लगाकर आगे बढ़ा है, वहीं कौशल और डिजिटल विकास की योजनाओं से युवाओं को सुसज्जित करके रोजगार के मौके बढ़ाए गए हैं। गिग इकोनॉमी का मतलब है अनुबंध आधारित या अस्थायी रोजगार (गिग वर्क) वाली अर्थव्यवस्था।

गिग अर्थव्यवस्था के तहत गिग वर्कर प्रोजेक्ट दर प्रोजेक्ट आधार पर काम करते हैं या सेवाएं देते हैं और वे यह चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं कि वे कब, कहां और कितना काम करेंगे। व्यापक तौर पर डिजिटलीकरण के प्रसार ने गिग अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। वस्तुतः गिग अर्थव्यवस्था डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन मार्केटप्लेस से संचालित होती है जो गिग वर्कर्स को खास तरह की सेवाओं की तलाश करने वाले कस्टमर्स से जोड़ती है। ये प्लेटफॉर्म बायर्स और सेलर्स के बीच ट्रांजैक्शन को सुविधाजनक बनाते हैं। जहां देश के शहरी क्षेत्रों में गिग अर्थव्यवस्था के तहत रोजगार के मौके तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं देश में कौशल और डिजिटल विकास से संबंधित सरकारी योजनाओं से शिक्षित-प्रशिक्षित युवाओं के लिए शहरों में अच्छे करियर के मौके बढ़े रहे हैं। चूंकि बड़ी संख्या में देश और दुनिया की कारोबार गतिविधियां अब ऑनलाइन हो गई हैं और वर्क फ्रॉम होम (डब्ल्यूएफएच) करने की प्रवृत्ति को व्यापक तौर पर मिली स्वीकार्यता से आउटसोर्सिंग को बढ़ावा मिला है। भारत के आईटी सेक्टर के द्वारा गुणवत्तापूर्ण सेवाओं से वैश्विक उद्योग-कारोबार इकाइयों का भारत की आईटी कंपनियों पर भरोसा बढ़ा है। इन दिनों प्रकाशित हो रही वैश्विक रोजगार रिपोर्टों में भारत की कौशल प्रशिक्षण नई पीढ़ी के लिए रोजगार के मौके बढने की टिप्पणियां की जा रही हैं। विश्व प्रसिद्ध मैकिंजी ग्लोबल इंस्टीट्यूट के द्वारा वैश्विक रोजगार रिपोर्ट में कहा गया है कि जहां भारत में डिजिटल अर्थव्यवस्था में वर्ष 2025 तक ऑटोमेशन, रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चलते करीब छह से साढ़े छह करोड़ रोजगार अवसर पैदा हो सकते हैं, वहीं इसकी वजह से करीब चार से साढ़े चार करोड़ परंपरागत नौकरियां समाप्त हो सकती हैं। ऐसे में 2025 तक डिजिटलीकरण से करीब 2 करोड़ से अधिक नई नौकरियां निर्मित होते हुए दिखाई देंगी। इसमें कई ऐसी डिजिटल नौकरियां होंगी जिनके नाम तक हमने नहीं सुने हैं।

निश्चित रूप से भारत की डिजिटल स्किल्ड नई पीढ़ी के लिए अच्छे रोजगार के मौके देश के साथ-साथ दुनिया के विभिन्न देशों- अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और जर्मनी आदि में औद्योगिक और कारोबार आवश्यकताओं में तकनीक और नवाचार के इस्तेमाल के कारण बढ़ते जा रहे है। इन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से आईटी, हेल्थकेयर, नर्सिंग, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फूड प्रोसेसिंग, जहाज निर्माण, विमानन, कृषिए अनुसंधान, विकास, सेवा व वित्त आदि हैं। रोजगार की बदलती हुई डिजिटल दुनिया में भारत पूरी तरह से लाभ की स्थिति में है। ऐसे में नई पीढ़ी को अच्छी अंग्रेजी, कम्प्यूटर-आईटी दक्षता, कोडिंग स्किल्स, कम्युनिकेशन स्किल्स, जनसंचार, वेब डिजाइन, कौशल बाजार अनुसंधान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑटोमेशन, क्लाउड कम्प्यूटिंग, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों से भी सुसज्जित किया जाना होगा। अब देश में स्किल इंडिया डिजिटल से कौशल, शिक्षा और उद्यमशीलता के लिए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना का पूरा लाभ लेते हुए नई पीढ़ी के लिए अधिक से अधिक रोजगार अवसर निर्मित किए जाने होंगे। साथ ही देश में इस वर्ष 2023-24 से शुरू प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 के माध्यम से देश के युवाओं को निर्धारित किए गए तकनीक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कौशल और प्रशिक्षण से सुसज्जित करके रोजगार की डगर पर आगे बढ़ाना होगा।

संपादक की कलम से

जारी रहेगा मुफ्त अनाज

देश के 80 करोड़ से अधिक गरीबों को 5 किलो मुफ्त अनाज अब आगामी 5 सालों तक भी मिलता रहेगा। खुद प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ चुनाव प्रचार के दौरान इसकी घोषणा की है। यह योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत है और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का भी हिस्सा है। यह योजना कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान मात्र तीन माह के लिए लागू की गई थी, लेकिन लगातार छठी बार इसकी समय-सीमा बढ़ाई गई है। संयोग है अथवा राजनीति है कि जब भी मुफ्त अनाज बांटने की अवधि बढ़ाई गई, तब कोई न कोई चुनाव सामने होता था। प्रधानमंत्री और भाजपा ने इसी योजना के जरिए एक ऐसा लाभार्थी वर्ग तैयार कर लिया है, जो उनके पक्ष में ही वोट डालता है। दूसरी योजनाओं की भी लाभार्थी-भूमिका पुख्ता की जा रही है। दरअसल इसी साल जनवरी, 2023 में मुफ्त अनाज की अवधि बढ़ाई गई, क्योंकि मई में कर्नाटक विधानसभा चुनाव थे। दिसंबर, 2021 में अवधि बढ़ाई गई, क्योंकि फरवरी, 2022 से पंजाब, उप्र, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर में विधानसभा चुनाव होने थे। पंजाब छोड़ कर भाजपा शेष सभी राज्यों में विजयी हुई और सरकारें बनाईं। नवम्बर, 2020 में मुफ्त अनाज बांटने की अवधि जून, 2021 तक की गई थी, क्योंकि मार्च-अप्रैल, 2021 में बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु, पुडुचेरी में चुनाव थे। भाजपा बंगाल, केरल, तमिलनाडु सरीखे बड़े राज्यों में पराजित हुई।

हर चुनाव से पहले इस योजना की घोषणा करना क्या 'आचार संहिता का उल्लंघन' नहीं है? चूंकि योजना 2020 से निरंतर जारी है, लिहाजा प्रधानमंत्री किसी भी मौके पर समय-सीमा में बढ़ोतरी की घोषणा करने को स्वतंत्र हैं? बेशक यह योजना 'राष्ट्रीय' है, लेकिन चुनाव वाले क्षेत्रों में औसत मतदाता एक हद तक प्रभावित तो होते हैं। बहरहाल इन सवालों पर तो चुनाव आयोग मंथन करेगा और जरूरी महसूस हुआ, तो देश को भी बताएगा। दरअसल राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून में अनाज मुहैया कराने के कई प्रावधान हैं। मकसद है कि कोई भी नागरिक भूखा न सोने पाए। इसका भी एक ईमानदार सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। गरीबी-रेखा के नीचे वाले वर्ग को हर महीने 5 किलो अनाज प्रति पारिवारिक सदस्य सबसिडी दरों पर आवंटित किया जाता है। उसके अतिरिक्त यह 5 किलो मुफ्त अनाज माहवार मुहैया कराया जाता है। इसमें गेहूं, चावल, एक किलो दाल या चना, नमक आदि होता है। इस खाद्यान्न पर भी भारत सरकार लाखों करोड़ रुपए की सबसिडी खर्च कर चुकी है। सरकार के शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी प्रधानमंत्री मोदी को अर्थव्यवस्था के प्रति आगाह कर चुके हैं। उसके बावजूद इस बार पूरे 5 साल के लिए मुफ्त अनाज की अवधि बढ़ा दी गई है। इससे प्रति वर्ष 2 लाख करोड़ रुपए की अतिरिक्त सबसिडी का बोझ बढ़ेगा। प्रधानमंत्री गरीबों के कल्याण और हर पेट को खाने की तुलना में सबसिडी को क्षुद्र मानते हैं। यह खर्च आगामी वित्त वर्ष के बजट में जोड़ा जाएगा। यह ऐसा मुद्दा है, जिस पर विपक्ष और बौद्धिक वर्ग सवाल तो करते हैं, लेकिन जमकर विरोध नहीं कर पाते, क्योंकि यह 80 करोड़ से अधिक नागरिकों की भूख और खाद्यान्न से जुड़ा मुद्दा है। इससे गरीबी-उन्मूलन के दावों के विरोधाभास भी उभर कर सामने आते हैं। प्रधानमंत्री दावा करते रहे हैं कि उनकी सरकार ने 13.5 करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी की परिधि से बाहर निकाला है, जबकि आरएसएस के सरकार्यवाह (महासचिव) अपना आकलन दे चुके हैं कि आज भी करीब 23.5 करोड़ नागरिक देश में ऐसे हैं, जो रोजाना 375 रुपए कमाने में भी असमर्थ हैं। दरअसल जो महिलाएं और पुरुष मुफ्त अनाज लेने जाते हैं, वे सभी बहुत गरीब हैं, ऐसा नहीं है। महिलाएं घरों और फैक्टरियों में काम करती हैं। पुरुष कोई न कोई काम जरूर कर रहा है। उनके नाबालिग बच्चे भी स्थानीय दुकानों और ढाबों पर दिहाड़ी करते हैं। इसलिए मोदी सरकार को प्राथमिकता के आधार पर गरीबी पर व्यापक सर्वेक्षण कराना चाहिए।

राय

विरासत से नाहन के सवाल

हिमाचल की सियासत ने इतिहास की नई संरचना के स्वार्थ में पौराणिक भूमिका भुला दी है। आज का हिमाचल कहीं अलग खड़ा होने के लिए तर्क बदल रहा है, तो हम भूल रहे हैं कि ये सदियां हमने कैसे गुजारीं। इतिहास अपने शैशव काल से पुरातन सभ्यता के दस्तावेज लिए अशोक काल से आधुनिक परिवेश के तरानों में जो देखना चाहता है, उससे कहीं अपरिचित काल में हिमाचल की हुकूमतों ने पर्वतीय रियासतों को विभिन्न काल खंडों से निकाल कर जोड़ा है। शासक सिरमौर, मंडी, कांगड़ा, चंबा, रामपुर बुशहर या कई क्षेत्रों को परिभाषित, परिमार्जित और परिष्कृत करते रहे, लेकिन आज की भागदौड़ ने ऐतिहासिक व धरोहर मूल्य ही गंवा दिए। कुछ टुकड़े आज भी नाहन, चंबा, सुजानपुर, रामपुर बुशहर या पुराना कांगड़ा के अवशेषों में सफर करते हैं या ब्रिटिश हुकूमत की निशानियों में शिमला, धर्मशाला, डलहौजी व कसौली जैसे शहरों का भविष्य देखते हैं।

यहां मंदिर हो, गुरुद्वारा हो या पीर-फकीर की मxार, इतिहास के दीपक एक समान जलते हैं, मगर राज्य की प्राथमिकताएं और दस्तूर इनके स्वरूप में खलल डालते हैं। कभी बुल्ले शाह ने 'जान मैं कौन' की रचना में 'नां मैं रहंदा विच नादौन' तक पहुंचने की रुहानियत में वक्त को रास्ता दिखाया या 'आए नादौन जाए कौन' तक कह डाला, लेकिन क्या आज यह शहर वक्त की इन्हीं चौपाइयों में जिंदा है। राजनीति के तमगे उतरते गए, ज्यों-ज्यों नेताओं का सफर परवान चढ़ा। जीतने के लिए तो नादौन महज एक विधानसभा सीट रही, लेकिन जिस शहर ने बुल्ले शाह को जीता, वह मुकाम आज कहां है। क्या आधुनिक इमारतों के शोर में ब्यास नदी के किनारे पुरानी हवाएं बदल गईं या मंजर को चुरा कर ही प्रगति का हिसाब होता है। इसी तरह कभी सिरमौर जिला के मुख्यालय 'नाहन शहर है नगीना, आए इक दिन लग जाए महीना' कहा गया था, लेकिन क्या नाहन का एक दिन अब महीने से लंबा हो पाया या महीना अगर एक दिन में सिमट गया, तो कौन दोषी है इस विरासत का जो आज भी सदियों के पन्नों पर अपनी मौजूदगी से सवाल कर रही है। कभी तालाबों का शहर रहे नाहन के विकास में अब न जल की आपूर्ति पूरी है और न ही जल निकासी के लिए कोई योजना कारगर सिद्ध हो रही। लार्ड लिटन का दिल्ली गेट और 1875 में महाराज शमशेर प्रकाश द्वारा स्थापित नाहन फाउंडरी का उद्देश्य इस शहर की मिट्टी में कहीं खो चुका है। राजाओं की 42 पीढियां जहां से गुजर गईं और शमशेर प्रकाश जैसे दूरदर्शी शासक द्वारा शहरी परियोजना का प्रारूप लिए यह नगर अपनी हर डगर पर ठोकर खा रहा है। न तो शहरी विकास की योजनाओं को यह खबर है कि यहां नगरपालिका का गठन उसी समय हो गया था, जब कोलकाता जैसे शहर अपनी शहरी व्यवस्था को इसी तरह सजा रहे थे। पर्यटन विकास के दावों के बीच नाहन की पौराणिकता और विरासत की भूमिका का श्रृंगार करते, तो सैलानियों का ठहराव आर्थिकी में कुछ नया जोड़ देता। बेशक विकास के शिलालेख चमकाती सियासत ने मेडिकल कालेज के बोर्ड हासिल कर लिए, लेकिन शहर की संकरी गलियों को भय है कि कहीं यह संस्थान भी गुम न हो जाए। इस शहर को विस्तार चाहिए और यह नाहन विकास परियोजना के तहत बाहरी दायरे में हो, तो इसकी पौराणिकता-ऐतिहासिकता बची रहेगी, वरना यह शहर यूं ही अपनी परिक्रमा में प्रगति के चिन्ह गंवा देगा। नाहन शहर की सीमा से बाहर लघु सचिवालय बनाकर अधिकांश कार्यालय शिफ्ट करने होंगे, वरना इतिहास के कब्रिस्तान में हम अपने भविष्य का दावा यूं ही करते रहेंगे। शहर के भीतर जिस किसी परिस्थिति या सियासत ने मेडिकल कालेज को दुर्ग बनाया, वह नाहन की छवि के लिए सबसे घातक कदम है।

छिलकों की छाबड़ी : शव संवाद-17

बुद्धिजीवी को अपनी फकीरी पर गुरुर था। वह दरअसल पहचाना ही गरीबों में गया। दुनिया के सारे उदाहरण, सारी कहानियां, सारी कविताएं इसलिए लिखी गईं क्योंकि इन्हें पढने वाले गरीब थे। किसी ने कहा गरीबी का अपना बुद्धिज्ञान है, जबकि अमीरी ज्ञान रहित, संवेदना रहित स्थिति का चरम है। बैंक में प्रवेश करते ही सबसे कम बुद्धि के साथ फार्म भरना पड़ता है, वरना किसी पटवारी के दस्तावेज भर के दिखाओ। सबसे अधिक बुद्धि झोंपड़ी में होती है। वहां का हर दिन अंतरिक्ष को देख सकता है। हर दिन सूखी रोटी को स्वादिष्ट बनाना बुद्धि का काम है, जबकि पंच सितारा होटल में उबलती दाल को क्या मालूम कि खाने वाला खाते हुए बुद्धि रखता है या नहीं। बुद्धि उस टांके में है जो पैबंद को पहनने लायक, फटी चप्पल को चलने लायक और कूड़ेदान में फेंके गए पार्टी फूड को फिर से खाने लायक बना देता है। बुद्धिजीवी हर समय खुद पर शक कर पाता क्योंकि उसे हासिल बुद्धि और क्या करती।

पतियों से कहीं ज्यादा बुद्धि पत्नियों के पास होती है या वे ये समझकर शंकालु हो जाती हैं। पत्नी की बुद्धि से डरेंगे तो आत्मशुद्धि होती रहेगी वरना कोई भी पति आज तक बुद्धिजीवी साबित होकर नहीं मरा। मरे नालायक बनकर या जिन्होंने सोचकर शादी पर राय बनाने में मेहनत की, कुंआरे ही मर गए। बहरहाल बुद्धिजीवी अकेला था। कोई नहीं जानता कि शादी के कारण वह ऐसा है या शादी न करके बुद्धिजीवी हो गया, फिर भी वह लोगों की अमीरी देखकर सोच में पड़ जाता है कि मरने के लिए इनसान का अमीर होना जरूरी है या फकीर सही तरह से मरते हैं। आज तक उसने किसी भी शव को अमीरी की हालत में नहीं देखा। लेकिन पता चला है कि कुछ अमीर मरने के लिए अमीरी को ही बुक करा रहे हैं। शहर में एक अलग से शमशानघाट बन गया जहां शवदाह के लिए बुकिंग जारी थी। बुद्धिजीवी के पास सूची थी जो मरने के बाद यहां बतौर अमीर ही शव में चाहते थे, लेकिन शहर में अचानक आई बाढ़ में कई लोग बह गए। इसी बाढ़ में एक अमीर का शव गरीबों के झुंड में फंस गया। सरकार शोक प्रकट कर चुकी थी, लेकिन घर वाले चाहते थे कि उसे अमीरों के शमशानघाट में अंतिम दर्शनों के लिए रखा जाए। आश्चर्य यह था कि जहां शव फंसे थे, वह गरीबों की जगह थी। वहां चारों ओर बस्ती थी। बुद्धिजीवी वहां सरकार के सहयोग से लाशें बटोर रहा था। जैसे ही अमीर शव उसके हाथों में आया, शव बतियाने लगा, 'मुझे गंगा जल से धोया जाए। यह अमीर की चमड़ी है। आसानी से नहीं जलेगी।' बुद्धिजीवी ने देखा कि अमीर की लाश गरीब शवों के झुंड में फंस कर आहत थी। गरीबों के शव शांत थे, लेकिन अमीर का शव छटपटा रहा था। आदतन बुद्धिजीवी ने गरीब शव उठाए, तो अमीर का भी उनके साथ उठ गया। वहां पहली बार सामूहिक रूप से जल रही चिताओं पर गरीब लाशें जल रही थीं, लेकिन किसी मलाल में अमीर का शव झुलस रहा था। पहली बार गरीबों ने मिलकर अमीर के शव को जलने में मदद की। बिना किसी शानो-शौकत के अमीर के शव को गरीबी में जलने का पहली बार एहसास हो रहा था। -क्रमशः

विचार

छात्रों में नशे की बढ़ती आदत चिंताजनक

देश और प्रदेश की समाजसेवी संस्थाओं को नशे को समाप्त करने के लिए पुलिस को सहयोग देना होगा'

भारतवर्ष के शिक्षण संस्थानों में बढ़ रहे नशा तस्करों से हर कोई परेशान है क्योंकि नशा तस्कर युवाओं के यौवन को खोखला करते नजर आ रहे हैं जो समाज के लिए एक गंभीर चुनौती बन रहे हैं। प्राचीन समय में हमारे शिक्षण संस्थान शिक्षा के मंदिर होते थे, जहां युवा अपने भविष्य की कहानी रचना शुरू करते थे, सपने संजोते थे, गुरुओं से आशीर्वाद लेते थे, ज्ञान व शब्दों को जीवन के यथार्थ में उतारते थे जिसके आधार पर शिक्षण संस्थान ज्ञान केन्द्र हुआ करते थे। लेकिन वर्तमान समय में वास्तविक स्थिति चिंताजनक है क्योंकि जो ज्ञान का केन्द्र होने का दर्जा प्राप्त है, वही आज तेजी से नशा तस्करों के लिए अच्छा बाजार बनता जा रहा है। चाहे वो हिमाचल प्रदेश के शिक्षण संस्थान हों या अन्य प्रदेशों के, स्थिति एक समान ही है। हाल ही में प्रदेश के सबसे बड़े शिक्षण संस्थानों में से एक एनआईटी हमीरपुर में जहां माता-पिता बच्चों की डिग्रियां लेने पहुंचते हैं तो एक पिता अपने मृत पुत्र का शव लेने पहुंचा। सोचिए, उस पिता पर क्या बीती होगी। कितनी हिम्मत होगी उस पिता में। इस घटना ने जहां एक तरफ एक घर का दीपक बुझा दिया तो दूसरी तरफ शिक्षण संस्थानों को नशा बाजार बनाने पर आतुर नशा तस्करों का भी भंडाफोड़ किया है।

यह एक चिंतनीय विषय है तथा ध्यान देने योग्य भी, कि नशा तस्करों का निशाना घरों से दूर पढ़ रहे बच्चे होते हैं जो कि कमरा लेकर या हॉस्टल लेकर घर वालों की नजर से दूर रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप घरवालों से पैसे मांगने पर पैसे भी मिल जाते हैं, लेकिन वो पैसे जाते कहां हैं, यह कुछ जिम्मेवार परिवार ही अपने बच्चों से पूछते हैं। यह नशा मामला कोई पहला नहीं है। ऐसे कई मामले प्रतिदिन समाचार पत्रों व न्यूज चैनलों पर देखने व सुनने को मिलते हैं। इनमें नया कुछ नहीं होता, कुछ होता है तो मरने वाला किसी घर का बच्चा, बाकि नशा तस्कर वही पुराने, नशा भी वही पुराना, तरीका भी वही और परिणाम भी वही। समाचार पत्रों में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा होता है 'कई मामलों में पहले से दोषी नशा तस्कर इस मामले में भी मुख्य आरोपी'। अगर वह पहले भी ऐसा कार्य करता हुआ पकड़ा गया है तो छूट कैसे गया, जो वो व्यक्ति बार बार छूट कर नशा परोसने में लग जाता है। ऐसे कृत्यों में आमतौर पर रसूखदार परिवारों के बच्चे इन कामों को कर रहे हैं जिन्हें पूछने वाला कोई नहीं है और पैसों की कमी भी नहीं है।

नशा युवाओं की नसों में घुल कर कई परिवारों का नाश बन रहा है। शिक्षण संस्थानों की कार्यप्रणाली व सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवालिया निशान है कि आखिर नशा परिसरों में कैसे पहुंच जाता है। अंदर तो छोड़ो, जहां नशा परिसरों के आसपास भी नहीं पहुंचना चाहिए, वो आसानी से छात्रों के हॉस्टल में मिल रहा है। किराए पर रह रहे युवाओं के कमरों में क्या चलता है, कोई नहीं जानता। मकान मालिक को समय पर किराया मिल रहा है, वो उसी में संतुष्ट है, उसे उससे अधिक कुछ नहीं चाहिए। आवश्यकता है नजर रखने की। इससे पहले भी अभी हाल ही में मंडी के एक किराए के कमरे में दोस्त के घरवाले घर गए तो रात को वहां ओवरडोज लेने से सुबह मौत की नींद मिली। यहां वो कहावत सिद्ध करते ये युवा नजर आते हैं 'घर वाले घर नहीं हमें किसी का डर नहीं'। परिवारों को जागना होगा, मुंह मांगे पैसे दो लेकिन नजर भी रखनी होगी कि आखिर खर्चे कहां जा रहे हैं, कहीं अपनी मौत की कहानी खुद ही तो नहीं लिखी जा रही। नशा तस्करों पर पुलिस न जाने इतनी मेहरबान क्यों नजर आती है कि नशा मामलों में संलिप्त इन आरोपियों को आखिर छोड़ क्यों दिया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में नशा एक महामारी की तरह फैल रहा है। प्रदेश के हर जिले में नशा माफिया अपने पैर पसार चुका है। हिमाचल पुलिस की

रिपोर्ट के अनुसार पिछले 6 सालों में एनडीपीएस के मामले दोगुनी रफ्तार से बढ़े हैं जोकि चिंताजनक है। नशे के मामलों में प्रदेश देशभर में दूसरे नंबर पर पहुंच गया है। पंजाब इस सूची में शिखर पर है। प्रदेश में मादक पदार्थों की तस्करी, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, भांग और अफीम की खेती बड़ी समस्या है, लेकिन पिछले कुछ सालों में लाखों युवा सिंथेटिक ड्रग जैसे हेरोइन, चिट्टा जैसे नशे की चपेट में आ गए हैं। अगर यह धंधा ऐसा ही चलता रहा तो कहीं हिमाचल को नशे की सूची में पहले स्थान पर आते समय नहीं लगेगा। देश समेत हिमाचल के युवाओं में पाश्चात्य प्रभाव में जन्मदिन के अवसर पर पार्टियां करना, नशा करना आम होता जा रहा है। कई होटलों में बार, पब और पार्टियों के नाम पर नशा खुले रूप में चल रहा है जिन्हें पूछने वाला कोई नहीं है, जिस कारण नशा खुलेआम रेस्तरां-हॉटलों से भी खुला फैल रहा है। इन पर जांच व रेड पडनी चाहिए। पुलिस के मुताबिक हिमाचल की कुल जनसंख्या में से 0.24 प्रतिशत आबादी नशे की चपेट में है। एक सर्वे के अनुसार प्रदेश में करीब 2 लाख युवा ड्रग एडिक्टिड हैं जिनमें लड़कियां भी शामिल हैं। यह स्थिति एक बड़े खतरे की ओर इशारा कर रही है तथा हिमाचल पुलिस के ये आंकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं कि खतरा कितना बड़ा है।

हिमाचल पुलिस के मुताबिक साल 2017 में प्रदेश के अलग-अलग थानों में एनडीपीएस के 1221 मामले दर्ज हुए, वर्ष 2018 में 1722, 2019 में 1935 और 2020 में 2058 मामले दर्ज हुए। याद कीजिए, 2020 वो साल था जिसमें कोरोना महामारी अपने रौद्र रूप में थी। ऐसे कोरोना के समय में भी हिमाचल में नशे के रूप में मौत का सामान बिकता रहा तथा साल 2021 में ये मामले बढक़र 2223 पहुंच गए और 2022 में 2226 मामलों के साथ स्थिति बिगड़ती ही जा रही है। जब 2023 के आंकड़े आएंगे तो कहीं गिनती अधिक न हो, इसका अंदेशा एक सप्ताह में ही पहले मंडी, फिर एनआईटी और न जाने लिखते लिखते और कहां किस घर का दीपक बुझ गया होगा। आखिर किसकी शह में परिसरों में नशा घुल रहा है और प्रदेश में इन नशा तस्करों ने ऐसा कैसा जाल बुना है। समय रहते इस जाल को न भेदा गया तो हो न हो इस नशे के नाश का अगला शिकार हम-आपके घर से हो। इसलिए आमजन को भी जागरूक होकर इस पाउडर रूपी मौत यानी चिट्टा को रोकना होगा तथा पुलिस को सहयोग कर इन नशा तस्करों को सलाखों के पीछे धकेलना ही होगा, अन्यथा देश-प्रदेश व खासकर शिक्षण संस्थानों में स्थिति सामान्य से कब अनियंत्रित हो गई, इसका अनुमान लगाना मुश्किल होगा। देश और प्रदेश की समाजसेवी संस्थाओं को भी नशे को समाप्त करने के लिए सरकार और पुलिस को सहयोग देना होगा। तभी नशा तस्करों की समाप्ति हो सकती है व युवाओं को नशे से छुटकारा मिल पाएगा।

प्रो. मनोज डोगरा

क्या एक से अधिक SCSS अकाउंट खुलवा सकते हैं? सरकार दे रही है 8.2 प्रतिशत ब्याज

परिवहन विशेष न्यूज

वरिष्ठ नागरिक बचत योजना वरिष्ठ नागरिकों के लिए सेवानिवृत्ति के बाद आय का स्रोत बनाने का एक बहुत अच्छा विकल्प है। आप पोस्ट ऑफिस सरकारी बैंक या प्राइवेट बैंक में जाकर Senior Citizen Savings Scheme Account खुलवा सकते हैं। हालाँकि अब आप घर से ऑनलाइन एससीएसएस खाता खोलकर निवेश शुरू कर सकते हैं। जानिए क्या आप एक से अधिक अकाउंट खुलवा सकते हैं या नहीं

नई दिल्ली। सरकार द्वारा समर्थित पोस्ट ऑफिस स्कीम में सीनियर सीटीजन सेविंग स्कीम (SCSS) वरिष्ठ नागरिकों के लिए रिटायरमेंट के बाद आय का साधन प्रदान करने वाला काफी अच्छा विकल्प है। वर्तमान में सरकार SCSS पर 8.2 प्रतिशत का ब्याज दर रही है।

आप Senior Citizen Savings Scheme अकाउंट को किसी भी डाक घर या फिर किसी भी सरकारी या निजी बैंकों में जाकर खुलवा सकते हैं। हालांकि अब आप घर बैठे ऑनलाइन SCSS अकाउंट ओपन करवा कर निवेश शुरू कर सकते हैं। लेकिन क्या आप एक से अधिक SCSS अकाउंट खोल सकते हैं? चलिए विस्तार से जानते हैं।

एक से अधिक खुलवा सकते हैं अकाउंट

इस सवाल का जवाब है हां, आप एक से अधिक सीनियर सीटीजन सेविंग अकाउंट (SCSS) खुलवा सकते हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि भले ही आप कई अकाउंट खुलवा लें लेकिन इन खातों में कुल निवेश SCSS कुल निवेश सीमा से अधिक नहीं हो सकता। आप चाहें तो सिंगल या फिर अपने पति या पत्नी के साथ ज्वाइंट अकाउंट भी खुलवा सकते हैं।

कौन है पात्र?

SCSS का लाभ उठाने के लिए आपकी उम्र 60 साल या उससे अधिक होनी चाहिए। हालांकि अगर आपकी उम्र 55 साल से अधिक लेकिन 60 साल से कम है और आप रिटायर हैं तो इस स्थिति में भी आप इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

मिलते हैं टैक्स बेनिफिट

चूंकी यह योजना भारत सरकार द्वारा समर्थित है इसलिए इस स्कीम में पैसे डूबने की संभावना ना के बराबर है। यह स्कीम 5 साल में मैच्योर होती है जिसे आप 3 साल के लिए आगे भी बढ़ा सकते हैं।

इसके अलावा आप इसमें टैक्स बेनिफिट का भी लाभ उठा सकते हैं। आयकर की धारा 80सी के तहत आप 1.5 लाख रुपये तक का छूट ले सकते हैं। इस योजना में आप न्यूनतम 1000 रुपये और अधिकतम 30 लाख रुपये तक निवेश कर सकते हैं।

मैच्योरिटी से पहले भी निकाल सकते हैं पैसा

SCSS में आपको मैच्योरिटी से पहले पैसे निकालने की भी सुविधा दी जाती है। आप SCSS अकाउंट खुलवाने के एक साल के बाद ही पैसा निकाल सकते हैं।

खाता खोलने के एक साल बाद व्यक्ति राशि निकाल सकते हैं। खाता खोलने के एक साल के भीतर समय से पहले बंद करने पर कोई शुल्क नहीं लगता। हालांकि, यदि खाता एक वर्ष के बाद लेकिन खोलने के दो साल के भीतर बंद किया जाता है, तो मूल राशि से 1.5 प्रतिशत का शुल्क काटा जाएगा।

यदि खाता दो साल के बाद लेकिन खाता खोलने के पांच साल के भीतर बंद किया जाता है तो मूल राशि से 1 प्रतिशत का शुल्क काटा जाएगा।

हफ्ते के पहले दिन अपडेट हुई पेट्रोल और डीजल की कीमत, चेक करें लेटेस्ट रेट

सोमवार 6 नवंबर को देश की तेल कंपनियों ने आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों को रिवाइज कर दिया है। राष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतें आज फिर से स्थिर बनी हुई हैं हालांकि कुछ शहरों में कीमतों में कुछ पैसों का बदलाव देखा जा सकता है।

नई दिल्ली। सोमवार सुबह 6 बजे आज एक फिर से देश की तेल कंपनियों ने देश के हर छोटे और बड़े शहरों के लिए पेट्रोल और डीजल की कीमतों को अपडेट किया है। हालांकि आज राष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों को एक बार फिर से स्थिर रखा गया है लेकिन कुल पैसों का बदलाव कुछ शहरों में जरूर देखा जा सकता है।

आपके शहर में क्या है रेट?

ये भी पढ़ें: FPI Data: नवंबर में भी एफपीआई ने जारी रखी बिकवाली, पहले तीन कारोबारी सत्र में बेचे 3400 करोड़ रुपये से अधिक के शेयर

शहर	पेट्रोल (कीमत प्रति लीटर)	डीजल (कीमत प्रति लीटर)
नई दिल्ली	96.72 रुपये	89.62 रुपये
तिरुवनंतपुरम	110.02 रुपये	98.80 रुपये
कोलकाता	106.03 रुपये	92.76 रुपये
नोएडा	97.00 रुपये	90.14 रुपये
गुरुग्राम	96.71 रुपये	89.59 रुपये
पटना	107.24 रुपये	94.04 रुपये
मुंबई	106.31 रुपये	94.27 रुपये
चैन्नई	102.63 रुपये	94.24 रुपये
बेंगलुरु	101.94 रुपये	87.89 रुपये
भुवनेश्वर	103.11 रुपये	94.68 रुपये
चंडीगढ़	96.20 रुपये	84.26 रुपये
हैदराबाद	109.66 रुपये	97.82 रुपये
जयपुर	108.48 रुपये	93.72 रुपये
लखनऊ	96.56 रुपये	89.75 रुपये

हर शहर में अलग कीमत क्यों

दरअसल पेट्रोल और डीजल की हर शहरों में अलग-अलग कीमत होने का कारण हर शहर और राज्य सरकार द्वारा लगाया जाने वाला कर्ज है। आपको बता दें कि आयातीत कच्चे तेल के एक बैरेल में करीब 159 लीटर क्रूड ऑयल होता है जिसे ऑयल रिफाइनरी रिफाइन कर उसमें से पेट्रोल और डीजल निकालती हैं।

सेलो वर्ल्ड के निवेशकों की भरी झोली, डेब्यू ट्रेड में कंपनी के शेयर ने दिया 28 प्रतिशत से अधिक का प्रीमियम

परिवहन विशेष न्यूज

सेलो वर्ल्ड लिमिटेड ने आज शुरुआती कारोबार में निवेशकों को अपने आईपीओ मूल्य पर 28 प्रतिशत का प्रीमियम दिया। सेलो वर्ल्ड के आईपीओ की कीमत 648 रुपये थी। सेलो वर्ल्ड कंपनी कंज्यूमर हाउसहोल्ड प्रोडक्ट स्टेशनरी जैसे प्रोडक्ट में कारोबार करती है। कंपनी का आईपीओ 30 अक्टूबर से 1 नवंबर तक के लिए खुला था। जानिए आज कंपनी का शेयर कितने पर कर रहा है ट्रेड।

नई दिल्ली। प्लेट, वाटर बॉटल, कप, आदि जैसे घरेलू उत्पाद और स्टेशनरी निर्माता सेलो वर्ल्ड लिमिटेड (Cello World Ltd) ने आज अपने डेब्यू ट्रेड में निवेशकों को अपने आईपीओ प्राइस के मुकाबले 28 प्रतिशत का प्रीमियम दिया है। सेलो वर्ल्ड का आईपीओ प्राइस 648 रुपये था जो अपने पहले ट्रेड में 28 प्रतिशत उछलकर ट्रेड कर रहा है।

कितने रुपये पर शेयर कर रहा ट्रेड?

सेलो वर्ल्ड का शेयर अपने ट्रेड के पहले दिन 28.24 प्रतिशत उछलकर 831 रुपये पर ट्रेड कर रहा है। इसके बाद कंपनी का शेयर और बढ़कर यानी 28.81 प्रतिशत चढ़कर 834.70 रुपये पर पहुंच गया। एनएसई पर कंपनी का शेयर 829 रुपये रहा जो 27.93 प्रतिशत की तेजी है।

क्या था आईपीओ ऑफर?

कंपनी का शुरुआती कारोबार के हिसाब से एमकैप 16,769.44 करोड़ रुपये है। आईपीओ के आखिरी दिन सेलो वर्ल्ड के आईपीओ को 38.90 गुना सब्सक्रीप्शन मिला। कंपनी ने इस आईपीओ का प्राइस बैंड 617 रुपये से 648 रुपये प्रति शेयर रखा था। कंपनी का आईपीओ 30 अक्टूबर से 1 नवंबर तक चला था और कुल आईपीओ ऑफर 1900 करोड़ रुपये था।

कंपनी को जानिए

मुंबई स्थित सेलो वर्ल्ड के पास तीन प्रमुख श्रेणियों में उत्पाद पोर्टफोलियो है - उपभोक्ता घरेलू सामान, लेखन उपकरण और स्टेशनरी, और मोल्डेड फर्नीचर और संबंधित उत्पाद। 2017 में कंपनी ने 'सेलो' ब्रांड के तहत ग्लासवेयर और ओपल वेयर व्यवसाय को भी शुरू किया था।

कंपनी के वेबसाइट से मिली जानकारी के मुताबिक कंपनी के पास देश में पांच स्थानों पर 13 विनिर्माण प्लांट है। विनिर्माण सुविधाओं के साथ कंपनी के पास नवीनतम ग्लोबल टेकनोलॉजी भी मौजूद है। कंपनी राजस्थान में एक नई ग्लासवेयर विनिर्माण प्लांट शुरू करने जा रही है जिसमें यूरोपीय निर्मित मशीनरी हो सकती है।

शुरुआती कारोबार में डॉलर के सामने मजबूत हुआ रुपया, इतने पैसे चढ़कर कर रहा है ट्रेड

शुरुआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 5 पैसे बढ़कर 83 .15 पर कारोबार कर रहा है जिससे शेयर बाजार में भी बढ़त दर्ज की गई है। मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि अक्टूबर में उम्मीद से कमजोर अमेरिकी रोजगार वृद्धि के बाद अमेरिकी मुद्रा के ऊंचे स्तर से पीछे हटने के बाद रुपया मजबूत हुआ है।

नई दिल्ली। सोमवार 6 नवंबर को डॉलर के सामने रुपया शुरुआती कारोबार में 5 पैसे बढ़कर 83.15 पर ट्रेड कर रहा है जिसके कारण शेयर बाजार में भी आज तेजी देखने को मिल रही है।

विदेशी मुद्रा व्यापारियों के मुताबिक अक्टूबर में अमेरिकी नौकरी में उम्मीद से कम वृद्धि के बाद डॉलर के अपने ऊंचे स्तर से गिरने के बाद रुपये में तेजी आई है।

कितने पर आज खुला रुपया?

इंटरबैंक फॉरेन एक्सचेंज पर आज रुपया 83.17 पर खुला और फिर 83.15 के शुरुआती उच्च स्तर को छू गया जो पिछले बंद के मुकाबले 5 पैसे की बढ़त है। वहीं शुक्रवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 83.20 पर बंद हुआ था। पीटीआई को फॉरेक्स और बुलियन विश्लेषक मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के गौरांग सोमैया ने कहा कि

यूरोज़ोन से सेवा पीएमआई (परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स) संख्या पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा और उम्मीद से बेहतर डेटा मुद्रा के लिए लाभ बढ़ा सकता है। हमें उम्मीद है कि USD-INR (स्पॉट) 83.05 और 83.40 की रेंज में कारोबार करेगा।

डॉलर इंडेक्स हुआ मजबूत

डॉलर की ताकत का अनुमान 6 मुद्राओं से लगाने वाला डॉलर इंडेक्स आज शुरुआती कारोबार में 0.03 प्रतिशत चढ़कर 105.05 पर ट्रेड कर रहा है।

क्रूड का वायदा हुआ महंगा

वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा 0.40 प्रतिशत बढ़कर 85.23 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। एक्सचेंज डेटा के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) शुक्रवार को पूंजी बाजार में शुद्ध विक्रेता थे, क्योंकि उन्होंने 12.43 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

भारतीय रिजर्व बैंक ने शुक्रवार को बताया कि 27 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 2.579 बिलियन अमेरिकी डॉलर बढ़कर 586.111 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।

बाजार में जारी है तेजी

शुरुआती काराबोर में शेयर बाजार में आज तेजी देखने को मिल रही है। खबर लिखे जाने तक सेंसेक्स 355.05 अंक या 0.55 प्रतिशत चढ़कर 64,718.83 अंक पर ट्रेड कर रहा है। निफ्टी 107.75 अंक या 0.56 प्रतिशत चढ़कर 19,338.35 पर ट्रेड कर रहा है।

दिवाली से पहले पंजाब नेशनल बैंक का ग्राहकों को तोहफा, एफडी पर बढ़ाई ब्याज दर

PNB Latest FD Rates पंजाब नेशनल बैंक ने 1 नवंबर 2023 से विभिन्न सावधि जमा (एफडी) पर ब्याज दरों में संशोधन किया है। पीएनबी अपने ग्राहकों को 3 .5 से 7 .25 प्रतिशत तक की ब्याज दरों के साथ 10 साल तक के लिए एफडी की सुविधा देता है। जानिए अब कितना है नया ब्याज दर।

नई दिल्ली। देश के बड़े सरकारी बैंक में से एक पंजाब नेशनल बैंक (PNB) ने दिवाली से पहले अपने ग्राहकों को तोहफा दिया है। बैंक ने विभिन्न फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर मिलने वाले ब्याज दरों में बदलाव किया है जो 1 नवंबर 2023 से लागू हो गई हैं। पंजाब नेशनल बैंक 10 साल तक के लिए एफडी की सुविधा देता है जिनकी ब्याज दर 3.5 प्रतिशत से शुरू होकर 7.25 प्रतिशत तक है। आज हम आपको बताएंगे की पीएनबी की किस एफडी अवधि के लिए आपको कितना ब्याज दिया जा रहा है।

क्या है पीएनबी के नए ब्याज दर?

पीएनबी ने कि आधाकारिक वेबसाइट के मुताबिक बैंक ने 2 करोड़ रुपये से कम के एफडी के लिए ब्याज दरों में कुछ संशोधन किया है जिसके बारे में आपको पता होना चाहिए। पीएनबी ने नए ब्याज में 180 से 270 दिन और 271 दिन से लेकर एक साल तक के कम के एफडी पर ब्याज दरों में बदलाव किया है। बाकी अवधियों के लिए ब्याज दर को सामान्य रखा गया है।

अवधि	सामान्य नागरिक	वरिष्ठ नागरिक
7 से 14 दिन के लिए	3.5 प्रतिशत	4 प्रतिशत
30 दिन से 45 दिन के लिए	3.5 प्रतिशत	4 प्रतिशत
46 दिन से 90 दिन के लिए	4.5 प्रतिशत	5 प्रतिशत
180 दिन से 270 दिन के लिए	6 प्रतिशत	6.5 प्रतिशत
271 दिन से 1 साल से कम के लिए		6.25 प्रतिशत
1 साल के लिए	6.75 प्रतिशत	6.75 प्रतिशत
2 साल से अधिक से लेकर 3 साल तक		7.25 प्रतिशत
3 साल से अधिक से लेकर 5 साल तक	7 प्रतिशत	7.5 प्रतिशत
5 साल से अधिक से लेकर 10 साल तक	6.5 प्रतिशत	7 प्रतिशत
	6.5 प्रतिशत	7.3 प्रतिशत

फेस्टिव सीजन के भारी खर्चों में कैसे करें फाइनेंशियल प्लानिंग, जानें कैसे बचा सकते हैं पैसे

त्यौहारों के शुरू होने के साथ ही लगभग हर घर में शॉपिंग शुरू हो जाती है जिस कारण से अक्सर खर्चे बढ़ जाते हैं। ऐसे में हम हमेशा इस चिंता में रहते हैं कि पैसो की बचत कैसे करें। आज हम आपको ऐसी ही कुछ टिप्स देना चाहते हैं जिससे आप आसानी से अपने पैसे बचा सकें।

नई दिल्ली। दिवाली के त्यौहार की शुरुआत हो गई है, ऐसे में हर घर में गोल्ड और अन्य शॉपिंग करते हैं। इतने सारे खर्चों में हमारी सबसे बड़ी परेशानी ये है कि हम अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग नहीं कर पाते हैं। हम आपको इस फेस्टिव सीजन में कुछ टिप्स देंगे, जिसकी मदद से आप आसानी से अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग कर सकेंगे। जैसा कि हम जानते हैं कि इन खर्चों के बीच सही फाइनेंशियल प्लानिंग करना जरूरी है। आइये इसके बारे में जानते हैं।

क्रेडिट कार्ड का संभाल कर करें इस्तेमाल

अगर आप क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते हैं तो ऐसी स्थिति में सोच समझ कर ही खर्चा करे क्योंकि अगर आप बहुत ज्यादा खर्चा करते हैं तो आप लंबे कर्ज में डूब सकते हैं। इसलिए क्रेडिट कार्ड का संभालकर उपयोग करें।

शॉपिंग की करें प्लानिंग

शॉपिंग करते समय आपको पहले से ही प्लानिंग करनी होगी, ताकि आप फालतू के खर्चों से बच सकें। सहीं प्लानिंग आपको अपने पैसे बचाने में मदद करती है।

टर्म और कडिशन का रखें ध्यान

अगर आप क्रैडिट कार्ड या बाय नाउ पे लेटर का इस्तेमाल कर रहे हैं तो ऐसी स्थिति में इनके ब्याज दरों को अच्छी तरह चेक कर लें। ऐसी स्थिति में आज खर्चे से बच सकते हैं। इसके अलावा अगर आप शॉपिंग करने के लिए अलग-अलग पेमेंट मोड का इस्तेमाल करें, ऐसा करने से आपके पैसे की बचत हो सकती है। हम ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि फेस्टिव सीजन के दौरान कंपनियां बहुत से ऑफर्स देती है।

'जेल से दिल्ली की सरकार चलाएंगे अरविंद केजरीवाल', बैठक के बाद एक सुर में बोले सभी

परिवहन विशेष न्यूज

बैठक के बाद आम आदमी पार्टी ने कहा कि सभी विधायकों ने कहा कि गिरफ्तारी के बाद भी अरविंद केजरीवाल ही सीएम बने रहें जेल से ही सरकार चलेगी क्योंकि दिल्ली की जनता ने सरकार चलाने का जनादेश दिया है। आतिशी ने कहा कि ईडी ने अगर गिरफ्तार किया तो हम जेल से काम करने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाएंगे।

नईदिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को आम आदमी पार्टी के विधायकों की बैठक बुलाई। बैठक के बाद आम आदमी पार्टी ने कहा कि पार्टी के सभी नेताओं ने अरविंद केजरीवाल से मुख्यमंत्री बने रहने का आग्रह किया, चाहे वह गिरफ्तार ही क्यों न हो जाएं।

जेल से काम करने के लिए जाएंगे कोर्ट- आतिशी

दिल्ली की मंत्री आतिशी ने कहा कि अगर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ईडी ने गिरफ्तार किया तो हम जेल से काम करने के लिए कोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे। आतिशी ने कहा, ₹कोर्ट से हम परमिशन लेंगे कि कैबिनेट की मीटिंग जेल के अंदर हो सके। जरूरत होगी तो सारे अफसर वहां पर जाएंगे। अगर जरूरत हुई तो हम वहां पर कैबिनेट मीटिंग की फाइल ले जाने की कोर्ट से परमिशन लेंगे। दिल्ली की सरकार अरविंद केजरीवाल जेल से चलाएंगे।₹

जनता ने सरकार चलाने का जनादेश दिया- सौरभ भारद्वाज

बता दें कि दिल्ली शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ईडी ने समन जारी किया था। हालांकि, अरविंद केजरीवाल समन को राजनीतिक रूप से प्रेरित करार देते हुए ईडी के सामने 02 नवंबर को पेश नहीं हुए। अब आप विधायकों की बैठक के बाद सौरभ भारद्वाज ने कहा कि सभी विधायकों ने कहा कि अगर केजरीवाल गिरफ्तार होते हैं तो भी वह मुख्यमंत्री बने रहेंगे, क्योंकि दिल्ली की जनता ने सरकार चलाने का जनादेश दिया है।

जेल के अंदर बैठकें करेंगे

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि ऐसे लग रहा है कि हम सभी भी जल्द जेल में होंगे। हो सकता है कि आतिशी को जेल नंबर 02 में और मुझे जेल नंबर 01 में रखा जाएगा और हम जेल के अंदर बैठकें करेंगे। खास बात है कि पिछले हफ्ते मंत्री राजकुमार आनंद के आवास पर ईडी ने छापा मारा था। इसके अलावा आम आदमी पार्टी के दो बड़े नेता जेल में बंद हैं।

कांग्रेस ने मोदी को संत और शाह को संत बताया

मनोरंजन सासमल , ओड़िशा

भुबनेस्वर : कांग्रेस ने मोदी को संत और शाह को संत बताया है.साथ ही कांग्रेस ने महादेव सट्टेबाजी ऐप का मुद्दा उठाकर बीजेपी पर निशाना साधा है. राष्ट्रीय कांग्रेस एस्टा कमेटी के अध्यक्ष पंचानन कानूनगो ने कहा, ₹छत्तीसगढ़ में हार के डर से वे झूठ बोलने के लिए ईडी का इस्तेमाल कर रहे हैं. 2014 के बाद भारत की स्थिति नहीं बदली है. अब तक वे झूठ बोलकर लोगों को धोखा देते रहे हैं.₹ अब कर्नाटक चुनाव के बाद और आगामी चुनाव से पहले मोदी-शाह ने नया 'फॉर्मूला अपनाया है. ईडी और सीबीआई आतंकवादी संगठनों की तरह काम कर रही हैं.'

छत्तीसगढ़ में बीजेपी को हारते देख ईडी ने छापा मारकर पैसे जब्त कर लिए. .छत्तीसगढ़ सरकार ने 450 से ज्यादा आरोपियों को गिरफ्तार किया है. इसके 2 मुख्य आरोपी हैं "उन्होंने देश का पैसा लिया और 2014 के बाद बीजेपी नेताओं के समर्थन में चले गए. मौजूदा मोदी सरकार देश की अर्थव्यवस्था को खराब दिशा में ले जा रही है. यह अब पता चल गया है" आम लोग," पंचानन कानूनगो ने कहा।

जानकारी के मुताबिक, बीजेपी ने कल प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा कि महादेव सट्टेबाजी ऐप के पैसे का इस्तेमाल कांग्रेस के चुनाव प्रचार के लिए कर रहे हैं. महादेव सट्टेबाजी घोटाले की लूट से कांग्रेस छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में चुनाव लड़ रही है. कांग्रेस सरकार सट्टेबाजी ऐप्स में लोगों से पैसा इकट्ठा करके और विभिन्न स्थानों पर पैसा खर्च करके चुनाव जीतने की कोशिश कर रही है। छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश से लेकर दुबई तक महादेव बेटिंग ऐप की जड़ें हैं।

भारत विरोधी ताकतें कांग्रेस को पैसा दे रही हैं. महादेव सट्टेबाजी ऐप घोटाला पिछले कुछ दिनों से चल रहा था। इस घोटाले में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल फंस गए हैं. महादेव सट्टेबाजी के प्रायोजकों ने ऑनलाइन जुआ खेल की व्यवस्था करके विभिन्न अभिनेताओं, अभिनेत्रियों और राजनेताओं को फंसाया है और अभियोजन पक्ष उसे जांच के दायरे में ला रहा है।

कच्ची बस्ती पहुंच जरूरतमंदों के साथ मनाया दीपोत्सव मिठाई खाकर पटाखे जलाकर बच्चों के चेहरे खिले

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। स्टूडेंट हेल्पिंग हैंड ग्रुप के तत्वाधान में करके देखो मन को अच्छा लगता है कार्यक्रम के तहत हर वर्ष की भाँति ग्रुप के कार्यकर्ताओं द्वारा शहर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में जरूरतमंद लोगों और बच्चों के साथ दीप जलाकर मिठाई बांटकर पटाखे जलाकर हर्षोल्लास के साथ दीपोत्सव मनाया गया ग्रुप के अध्यक्ष रवि कचोलिया ने बताया कि इस मौके पर सहयोग हेतु गो सेवा मित्र मंडल के संयोजक बाबा डाढ़ विकास कचोलिया अमन शर्मा सुशील मूंधरा ने सहयोग हेतु साथ रहे

स्टूडेंट हेल्पिंग हैंड हर साल इस तरह बच्चों के साथ दिवाली मनाकर मिठाई वितरण का आयोजन कराता है और साथ ही कच्ची बस्ती में जाकर वितरित किया कार्यक्रम में सुनील पारीक, भावेश आंचलिया, विशाल काबरा, गौरव तंबोली, अंकुश, मयंक, दीपक , वैभव, नीलिमा वैष्णव, साक्षी, खुशी शर्मा आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

अपना घर वृद्धाश्रम में 41 वृद्धजनों का किया सम्मान

परिवहन विशेष -अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। श्री गणेश उत्सव प्रबंध एवं सेवा समिति द्वारा आर सी व्यास कॉलोनी स्थित अपना घर वृद्धाश्रम में सोमवार को वरिष्ठ लोगों का सम्मान किया गया मुख्य अतिथि पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एन के जैन, श्री गोपाल राठी शांतिलाल बीयानी, बी एल माहेश्वरी थे मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया कि वृद्ध जन सम्मान समारोह में 41 वरिष्ठ जनों को पगड़ी व सोल ओढ़ाकर सम्मान किया गया उन्हें प्रशस्ति पत्र भी सम्मान के रूप में दिया गया समिति अध्यक्ष उदयलाल समदानी ने अपने उद्बोधन मैं कहा की वृद्ध जन समाज की धरोहर है इनका समय-समय पर सम्मान स्वागत किया जाना चाहिए, समिति के सेवा कार्य के लिए सुभाष गर्ग, दयाशंकर शुक्ला, श्याम पारीक ,नंदलाल प्रजापत नरेंद्र डाड, प्रशांत समदानी सत्यनारायण नुवाल, रामनारायण, शांत सोमानी आदि ने अपनी सेवाएं दी वृद्ध जनों का सम्मान प्रतिवर्ष समिति द्वारा किया जाता है।

जैव विविधता पार्क में दिखी दुर्लभ तितलियों की 75 प्रजातियां, बदलते पर्यावरण के चलते कई विलुप्त

नईदिल्ली। दिल्ली के जैव विविधता पार्क में बदलते पर्यावरण के चलते जीव-जंतुओं की कई प्रजातियां विलुप्त होने की श्रेणी में पहुंच गई हैं। लेकिन वहीं दूसरी तरफ पार्कों में 30 अक्तूबर से चार नवंबर तक चले तितली मूल्यांकन सप्ताह में 75 प्रजातियों की गणना की गई। राजधानी के जैव विविधता पार्क तितलियों के लिए अच्छे आवास साबित हो रहे हैं। तितलियां बहुत महत्वपूर्ण परागणकर्ता हैं। पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए जैव विविधता की अहम भूमिका है। बदलते पर्यावरण के चलते जीव-जंतुओं की कई प्रजातियां विलुप्त होने की श्रेणी में पहुंच गई हैं। इन्हीं में तितली की भी कई दुर्लभ प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। ऐसे में सात जैव विविधता पार्कों में 30 अक्तूबर से चार नवंबर तक चले तितली मूल्यांकन सप्ताह में 75 प्रजातियों की गणना की गई। पिछले वर्ष 76 प्रजातियों की गणना की गई थी। इसमें यदि अक्टूबर 2023 के मौसम संबंधी आंकड़ों की तुलना पिछले 2 वर्षों से करें, तो इस वर्ष बारिश के दिनों की संख्या में भारी कमी आई है, जिसके परिणामस्वरूप इनकी प्रजातियों में मामूली गिरावट आई है।

दिल्ली : दमघोटू सांसों पर 'पल्यूशन हॉलीडे' नौबत

परिवहन विशेष एसडी सेठी। राजधानी दिल्ली की साल-दर-साल जहरीली होती सांसों से जूझते लोगों को सरकारी तंत्र के बेतरतीब आसान लाज़वाब नुस्खे जिनमें स्कूलों में छुट्टी, कंस्ट्रक्शन का काम बंद, ऑड-इवन जैसे अस्थाई अप्रभावी निरंतर परम्परा की जगह सबसे मुफीद इलाज 'पल्यूशन हॉलीडे करने की सलाह सरकार से की जाने लगी है। इनमें दिल्ली पेरेंट्स एसोसिएशन, समेत अन्य नागरिक संगठनों ने तो यहां तक कह डाला कि यह तो सरकार का फेल्योर ही माना जाना चाहिए। इसी क्रम में नागरिक अधिकार आंदोलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजवरत आर्य ने कहा कि सरकार की नौसिखियायी स्कूल, काम बंद करने के तुगलकी ऐलान से आगे स्थाई निदान की जगह कल यह भी कह सकती है कि सांस लेना बंद कर दो। उन्होंने कहा कि एक तरफ गाडियों के लोन को बढावा दिया जा रहा है। इससे घर-घर गाडियों का रेला लग गया है। आये दिन गाडी पार्किंग को लेकर झगडे फसाद यहां तक की मर्डर तक किए जा रहे हैं। जबकि पार्किंग का निदान अब तक नहीं हो सका है।

इसी तरह बरवाला पंचायत 360 के संस्थापक और सुप्रीमों राम किशन पूनिया ने सरकार द्वारा स्कूलों की छुट्टी किए जाने पर कहा कि राजधानी दिल्ली के वर्तमान हालात जो पल्यूशन से बने हुए है उसको देखते हुए प्राथमिक/उच्च स्तर के बच्चों की छुट्टी कर दी गई है ।यह हर साल की (परंपरा) मामला बन गया है। बच्चौं की छुट्टी करना कोई समाधान नहीं है। उन्होने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण कार्य सिर्फ नाम मात्र का है। कोई भी बच्चा घरों में कैद नहीं रहता। सभी गली कूचों में खेलते-कूदते रहते हैं। पूनिया ने दिल्ली सरकार के फेल्योर पर कहा कि इससे तो बेहतर है कि सरकार द्वारा हर साल 'पल्यूशन हॉलीडे' घोषित कर दिया जाना चाहिए। ताकि प्रतिवर्ष का शिक्षण कार्य का कैलेण्डर उसी हिसाब से बनाया जा सके।

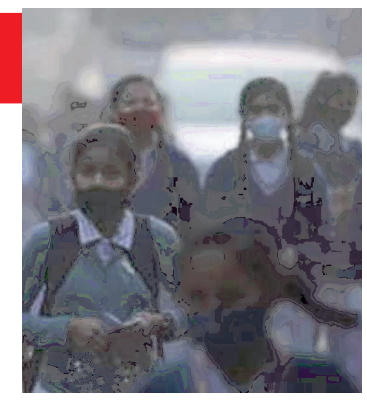

भीलवाड़ा विधानसभा में भाजपा ने जनसंपर्क प्रचार मे पकड़ी गति

परिवहन विशेष न्यूज

अनूप कुमार शर्मा, भीलवाड़ा। विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी विट्ठल शंकर अवस्थी ने आज भाजपा गणेश मंडल के विभिन्न क्षेत्रों में दौरा कर जनसंपर्क किया भीलवाड़ा जिले से सात विधानसभा में भाजपा ने 6 विधानसभाओ में प्रत्याशियों ने नामांकन 4 नवंबर तक भर लिया था आज शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी लालाराम बैरवा ने नामांकन भरा, इसी के साथ सातों विधानसभा में भाजपा प्रत्याशीयो ने नामांकन भर भाजपा का प्रचार करते हुए जनसंपर्क तेजी से शुरू कर दिया है

शाहपुरा विधानसभा से बैरवा ने भरा नामांकन

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी महावीर समदानी ने बताया कि शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी लालाराम बैरवा ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया इस दौरान जिला चुनाव प्रभारी सुभाष बराला ,उत्तर प्रदेश कासगंज से पूर्व विधायक ममतेश शावय, भीलवाड़ा सांसद सुभाष बहेडीया, भाजपा जिला अध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा उपस्थित थे

अवस्थी का भाजपा गणेश मंडल में जनसंपर्क

भाजपा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी विट्ठल शंकर अवस्थी का भाजपा गणेश मंडल क्षेत्र में जनसंपर्क किया, भाजपा गणेश मंडल अध्यक्ष घनश्याम सिंघीवाल ने बताया कि आज गायत्री नगर, गणेश कॉलोनी मालोला चौराहा ,बाबा धाम, श्याम नगर व संतोष कॉलोनी में भाजपा प्रत्याशी को जीताने का आव्हान करते हुए उन्हें पंपलेट वितरित कर मतदाताओं से सघन जनसंपर्क किया इस अवसर पर भीम सिंह हाडा, लादु वैष्णव, अशोक पालीवाल, महावीर साहू, घनश्याम काका, सुरेंद्र सिंह राठौर, राकेश गुर्जर भंवर सिंह ,हरिशंकर ओझा,

रोहित साहू राधेश्याम पांन्डिया, बलदेव नायक, विनोद शर्मा पीरू सिंह, शंभू लाल भट्ट ,राकेश तेली, प्रकाश सिंह, प्रदीप गर्ग हिम्मत गौड दुर्गा शंकर शर्मा सनेहलता पांडे ,आशा देवी, सुधा पवार, पिंकी साहू, प्रेम शंकर राठौड़, कमल चरण सहित सैकड़ों जन जनसंपर्क में उपस्थित थे

भाजपा प्रत्याशी का 7 नवंबर को होगा सुभाष मंडल में जनसंपर्क

भाजपा सुभाष मंडल अध्यक्ष मनीष पालीवाल ने बताया कि भीलवाड़ा विधानसभा के प्रत्याशी विट्ठल शंकर अवस्थी का 7 नवंबर को प्रातः 8:15 बजे सत्यम कापलेक्स रोड, शिव मंदिर से जनसंपर्क प्रारंभ होगा जो भाजपा सुभाष मंडल के समस्त आरके कॉलोनी के विभिन्न सेक्टर एवं सिविल लाइंस में मतदाताओं से संपर्क करेंगे

स्वास्थ्य के साथ सौंदर्य के लिए भी लोगों को ठीक से जानकारी होनी चाहिए तभी तो स्वास्थ्य रहेंगे आप : डॉ हृदयेश कुमार

फ़रीदाबाद हरियाणा

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार आमजन लोगो को स्वास्थ्य के साथ सौंदर्य रहने वाले उपाय और घरेलू नुस्खे बता कर कर रहे हैं आमजन को जागरुक डॉ हृदयेश कुमार ने बताया ।

ठंड के मौसम में ऐसे उपयोग करें गुड़हल का फेस पैक, । सर्दियों की हल्की दस्तक के साथ ही स्किन पर इसका असर दिखने लगता है। मौसम की ठंडक और इन दिनों हो रहे प्रदूषण की वजह से स्किन का नेचुरल मॉइश्चर खत्म हो रहा है। जिसकी वजह से चेहरे और हाथों-पैरों में ड्राईनेस दिखने लगती है। इस ड्राई और बेजान सी स्किन को निखार देने का काम कर सकता है गुड़हल का फूल। साथ ही ये चेहरे दाग-धब्बे भी हटाएगा।

गुड़हल के फूल से बनाएं फेस पैक- गुड़हल का फूल ज्यादातर गार्डनिंग में शामिल रहता है। गुड़हल के फूल को सुखाकर रख लें। इन सूखे गुड़हल के फूल के पाउडर में शहद मिक्स करें और फेस पैक तैयार करें। इस फेस पैक को चेहरे पर और हाथों में लगाएं। रोजाना इस फेस पैक को लगाने से रूखी और ड्राई हो रही स्किन से छुटकारा मिल जाएगा।

चेहरे पर पिंपल हो रहे तो ऐसे लगाएं- चेहरे पर कील-मुंहासे और दाने हो रहे हैं तो इनसे सर्दियों में छुटकारा पाने के लिए गुड़हल के फूल को सुखाकर पाउडर बना लें। इस पाउडर में दही मिलाएं। साथ में लेवेंडर एसेंसेशियल ऑयल की कुछ बूंदों को मिला दें। इस फेस पैक को चेहरे पर लगाएं और करीब आधे घंटे बाद चेहारा साफ कर लें। इस फेस पैक को सप्ताह में दो से तीन बार लगाने से सर्दियों में हो रहे कील-मुंहासे से छुटकारा मिलेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023